



इग्नू
जन जन का
विश्वविद्यालय

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

BECC-106

मध्यवर्ती समष्टि
अर्थशास्त्र - I



मध्यवर्ती समष्टि अर्थशास्त्र-I

विशेषज्ञ समीति

प्रो० अतुल शर्मा (सेवानिवृत्त) पूर्व निदेशक भारतीय सांख्यिकी संस्थान, नई दिल्ली	प्रो० एम.एस. भट्ट (सेवानिवृत्त) जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली	डॉ० अनुप चटर्जी (सेवानिवृत्त) ए.आर.एस.डी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ० सुरजीत दास सी.ई.एस.पी. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली	डॉ० मजुला सिंह सेंट स्टीफंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय नई दिल्ली	प्रो० बी. एस. प्रकाश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली
प्रो० कौस्तुभ बारिक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली		

पाठ्यक्रम संयोजक समीति

खण्ड/ इकाई शीर्षक	इकाई लेखन एवं हिंदी अनुवाद	
खण्ड 1	समग्र मांग एवं समग्र आपूर्ति	
इकाई 1	समग्र मांग	सुश्री अर्चना अग्रवाल, सहायक प्राध्यापक, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय। हिंदी अनुवाद – कुमुद कुमार
इकाई 2	समग्र आपूर्ति	
इकाई 3	संतुलन उत्पादन और कीमतें	
खण्ड 2	प्रत्याशाएँ, मुद्रास्फीति और बेरोजगारी	
इकाई 4	अनुकूली प्रत्याशाएँ	डॉ. तरुण माँझी, सहायक प्राध्यापक, श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय। हिंदी अनुवाद – कुमुद कुमार (इकाई 4) और सुश्री निधु कुमारी (इकाई 5)
इकाई 5	विवेकशील प्रत्याशाएँ	
इकाई 6	मुद्रास्फीति और बेरोजगारी	
खण्ड 3	भुगतान संतुलन और विनिमय दर	
इकाई 7	वित्तीय बाजार	डॉ० आर्ची भाटिया, सह-आचार्य, हिमाचल प्रदेश केन्द्रिय विश्वविद्यालय, धर्मशाला। हिंदी अनुवाद – कुमुद कुमार
इकाई 8	भुगतान संतुलन	
इकाई 9	विनिमय दर का निर्धारण	
खण्ड 4	मुक्त अर्थव्यवस्था प्रतिमान	
इकाई 10	मंडल-पलेमिंग प्रतिमान	डॉ० आर्ची भाटिया, सह-आचार्य, हिमाचल प्रदेश केन्द्रिय विश्वविद्यालय, धर्मशाला। हिंदी अनुवाद – कुमुद कुमार
इकाई 11	डॉर्नबुश का अतिलंघन प्रतिमान	
इकाई 12	मुक्त अर्थव्यवस्था में समष्टि-अर्थशास्त्रीय नीति	

पाठ्यक्रम संयोजक: प्रो० कौस्तुभ बारिक

सामग्री निर्माण

July, 2021

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2021

ISBN:

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिनियोग्राफी(चक्र मुद्रण) द्वारा अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068 से अथवा इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट : <http://www.ignou.ac.in> से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की तरफ से निदेशक सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाईप सेट: मुकेश कुमार यादव

आवरण सज्जा : संदीप मैनी

मुद्रण:

विषय—सूची

खंड 1	समग्र मांग एवं समग्र आपूर्ति	पृष्ठ संख्या
इकाई 1	समग्र मांग	5
इकाई 2	समग्र आपूर्ति	16
इकाई 3	संतुलन उत्पादन और कीमतें	25
खंड 2	प्रत्याशाएँ, मुद्रास्फीति और बेरोजगारी	
इकाई 4	अनुकूली प्रत्याशाएँ	56
इकाई 5	विवेकशील प्रत्याशाएँ	67
इकाई 6	मुद्रास्फीति और बेरोजगारी	78
खंड 3	भुगतान संतुलन और विनिमय दर	
इकाई 7	वित्तीय बाजार	88
इकाई 8	भुगतान संतुलन	103
इकाई 9	विनिमय दर का निर्धारण	124
खंड 4	मुक्त अर्थव्यवस्था प्रतिमान	
इकाई 10	मंडल—फ्लेमिंग प्रतिमान	140
इकाई 11	डॉर्नबुश का अतिलंघन प्रतिमान	157
इकाई 12	मुक्त अर्थव्यवस्था में समष्टि—अर्थशास्त्रीय नीति	168
शब्दावली		186
कुछ उपयोगी पुस्तकें		198

पाठ्यक्रम परिचय

बी.ई.सी.सी.-103 के पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को समष्टि अर्थशास्त्र के कुछ महत्वपूर्ण विषयों से अवगत करवाया गया था। वर्तमान पाठ्यक्रम (बी.ई.सी.सी.-106) में विद्यार्थियों को समष्टि अर्थशास्त्र के महत्वपूर्ण विषयों का विस्तृत रूप से अध्ययन करवाया जाएगा। वर्तमान पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को विश्लेषणात्मक उपकरणों (Analytical Tools) के माध्यम से समष्टि अर्थव्यवस्था में औपचारिक मॉडलों के निर्माण के विषय में बताएगा। वर्तमान पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को अर्थव्यवस्था में, अल्पकाल एवं मध्यकाल में उत्पादन एवं रोजगार के निर्धारण के वैकल्पिक सिद्धांतों की व्याख्या करेगा तथा इस संदर्भ में विभिन्न नीतियों की भूमिका पर भी चर्चा करेगा। यह पाठ्यक्रम 4 खण्डों में विभाजित है।

खण्ड 1 का शीर्षक है, “समग्र मांग एवं समग्र पूर्ति”। यह खण्ड बी.ई.सी.सी.-103 पाठ्यक्रम में चर्चित IS- LM मॉडल का विस्तृत रूप है। **इकाई 1** IS- LM मॉडल पर आधारित समग्र मांग वक्र की व्युत्पत्ति से आरम्भ होती है तथा मांग वक्र को प्रभावित करने वाले कारणों एवं उन कारणों के परिणामस्वरूप मांग वक्र में होने वाले विभिन्न प्रकार के खिसकावों की व्याख्या करती है। **इकाई 2** कीमत निर्धारण एवं मजदूरी निर्धारण के समीकरण (equation) से व्युत्पन्न समग्र पूर्ति वक्र की व्याख्या करती है। **इकाई 3** जोकि समग्र मांग एवं समग्र पूर्ति को एक साथ दर्शाती है, मांग आघात (demand shocks) एवं पूर्ति आघात (supply shocks) के संतुलन एवं कीमतों पर पड़ने वाले प्रभावों की व्याख्या करती हैं।

खण्ड 2 का शीर्षक है “प्रत्याशाएँ, मुद्रास्फीति एवं बेरोजगारी”। इस खण्ड में हम प्रत्याशाओं (expectations) के सैद्धांतिक अवधारणा एवं प्रत्याशाओं की समष्टि अर्थशास्त्र में भूमिका की व्याख्या करेंगे। **इकाई 4** अनुकूली (adaptive) प्रत्याशाओं की अवधारणा, विशेषताएं, क्षेत्र एवं सीमाओं की चर्चा करती है। **इकाई 5** में हम युक्तिपूर्ण या विवेकशील (rational) प्रत्याशाओं की विषय वस्तु पर चर्चा करेंगे। सभी उपलब्ध सूचनाओं को ध्यान में रखकर आर्थिक प्रतिनिधि कैसे निर्णय लेते हैं, हम चर्चा करेंगे। इसके अतिरिक्त, अप्रभावी कथन नीति (policy ineffective proposition) एवं IS-LM के विश्लेषण में प्रत्याशा की भूमिका का वर्णन करेंगे। **इकाई 6** में हम मुद्रास्फीति एवं बेरोजगारी के बीच सम्बन्धों पर चर्चा करेंगे। इस इकाई का आरम्भ, परम्परागत नीचे की ओर ढलान वाले फिलिप्स वक्र से होता है। तत्पश्चात् यह इकाई विद्यार्थियों को प्रत्याशाओं से अवगत करवाती है एवं दीर्घकाल में फिलिप्स वक्र के लम्बवत होने के कारणों की व्याख्या करती है।

खण्ड 3 का शीर्षक है “भुगतान शेष एवं विनिमय दर”। इस खण्ड में तीन इकाईयाँ हैं। **इकाई 7**, वित्तिय बाजार की भूमिका, इसके प्रकार एवं विशेषताओं का वर्णन करती है तथा वित्तिय यौगिक (derivative) एवं विदेशी विनिमय बाजार की भी व्याख्या करती है। **इकाई 8**, भुगतान शेष एवं लेखांकन के सिद्धांतों, आयातों एवं निर्यातों के निर्धारकों तथा पूंजी प्रवाहों का वर्णन करती हैं। **इकाई 9** विनिमय दर के निर्धारण के सिद्धांत एवं विभिन्न विनिमय दरों की व्यवस्था में तथा विभिन्न विनिमय दरों के निर्धारण एवं क्रय शक्ति क्षमता का वर्णन करती है।

खण्ड 4 का शीर्षक है “मुक्त अर्थव्यवस्था प्रतिमान”। इस खण्ड में तीन इकाईयाँ हैं। **इकाई 10**, मंडल-फ्लेमिंग प्रतिमान (model), जो विभिन्न विनिमय दरों की व्यवस्थाओं के अन्तर्गत, मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों की प्रभावशीलता का अध्ययन कराती है। **इकाई 11** डॉर्नबुश अतिलंघन प्रतिमान की व्याख्या करती है, जो मौद्रिक आघातों (shocks) के परिसम्पत्ति बाजार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करती हैं। **इकाई 12** खुली अर्थव्यवस्था में समष्टि आर्थिक नीति (macroeconomic policy) माध्यम से, मुद्रा पूर्ति, ब्याज दर एवं विनिमय दर के परस्पर सम्बन्धों का व्याख्या करती है।

इकाई 1 समग्र माँग*

इकाई की रूपरेखा

- 1.0 उद्देश्य समग्र
- 1.1 विषय प्रवेश
- 1.2 IS-LM मॉडल का विहंगावलोकन
 - 1.2.1 वस्तु व मुद्रा बाजारों में सहकालिक संतुलन
 - 1.2.2 राजकोषीय नीति और निवेश पलायन
 - 1.2.3 मौद्रिक नीति और हस्तांतरण क्रियातंत्र
- 1.3 समग्र माँग वक्र
 - 1.3.1 AD वक्र की प्रवणता
 - 1.3.2 AD वक्र का खिसकाव
 - 1.3.3 राजकोषीय नीति और AD वक्र
 - 1.3.4 मौद्रिक नीति और AD वक्र
- 1.4 समग्र माँग और समग्र आपूर्ति एक साथ
 - 1.4.1 माँग आघात और पूर्णतः लोचदार AS वक्र
 - 1.4.2 माँग आघात और पूर्णतः लोचहीन AS वक्र
 - 1.4.3 माँग आघात और ऊर्ध्वमुखी प्रवण AS वक्र
- 1.5 सार—संक्षेप
- 1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

1.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होंगे कि—

- दो वक्रों IS-LM विश्लेषण का विवरण तैयार कर सकें;
- वे दशाएँ बता सकें जिनके अनुसार राजकोषीय नीति प्रभावी होती है;
- वे दशाएँ बता सकें जिनके अनुसार मौद्रिक नीति प्रभावी होती है;
- उक्त IS-LM मॉडल से समग्रमाँग (AD) वक्र अवकलित कर सकें;
- वे कारक पहचान सकें जो AD वक्र की स्थिति और प्रवणता को प्रभावित करते हैं;
- उक्त AD वक्र में खिसकाव हेतु कारण बता सकें;
- उक्त AD वक्र पर राजकोषीय नीति व मौद्रिक नीति का प्रभाव स्पष्ट कर सकें; तथा
- स्पष्ट कर सकें कि किसी माँग आघात का प्रभाव समग्र आपूर्ति (AS) वक्र की आकृति पर निर्भर कैसे करता है।

1.1 विषय प्रवेश

इस पाठ्यक्रम 'BECC 103: प्रारंभिक समष्टि अर्थशास्त्र' के खंड 5 में हमने तीन विषयों पर विस्तृत चर्चा की थी, यथा (i) IS वक्र का अवकलन, (ii) LM वक्र का अवकलन, (iii) IS-LM वक्रों की अंतर्क्रिया इससे हमें ज्ञात हुआ कि वस्तु बाजार संतुलन IS वक्र से निरूपित की जाती है जबकि मुद्रा बाजार संतुलन LM वक्र से दर्शाई जाती है। यदि हम केवल एक वक्र (IS अथवा LM) पर ही विचार करें तो उत्पादन (Y) एवं ब्याज दर (i)

* सुश्री अर्चना अग्रवाल, सहायक प्राध्यापक, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

दोनों के संतुलन स्तर निर्धारित नहीं किए जा सकेंगे। दूसरे शब्दों में, ब्याज दर ज्ञात किए बिना वस्तु बाजार संतुलन निर्धारित नहीं की जा सकती (क्योंकि निवेश व्यय ब्याज दर का ही फलन होता है)।

इसी प्रकार, आय स्तर ज्ञात किए बिना मुद्रा बाजार संतुलन निर्धारित नहीं की जा सकती (क्योंकि मुद्रा की माँग आय स्तर का ही फलन होता है)। इस कमी को दूर करने के लिए ही हम IS और LM वक्रों को एक जगह लाए थे ताकि उत्पादन स्तर और ब्याज दर एक साथ ज्ञात किए जा सकें।

इस इकाई की शुरुआत हम IS-LM मॉडल पर एक विहंगम दृष्टि डालकर करेंगे। तदंतर, हम समग्र माँग(AD) वक्र वकलित करेंगे और समझेंगे कि राजकोषीय नीति और मौद्रिक नीति से समग्र माँग कैसे प्रभावित होती है। अंत में हम उत्पादन और कीमत के संतुलन स्तर निर्धारित करने के लिए समग्र माँग (AD) वक्र और समग्र आपूर्ति (AS) वक्र को एक स्थान ही पर लाएँगे।

1.2 IS-LM मॉडल का विहंगावलोकन

यह निवेश-बचत अर्थात् IS वक्र ब्याज दर (i) और उत्पादन स्तर (Y) का संयोजन दर्शाता है, जहाँ वस्तु बाजार संतुलन में होता है। पाठ्यक्रम BECC 103 की इकाई 12 से आपको याद ही होगा कि IS वक्र के प्रत्येक बिंदु पर वस्तु बाजार संतुलन में होता है। यह वक्र अधोमुखी प्रवण होता है और निम्नलिखित समीकरण से दर्शाया जाता है –

$$Y = aA - abi \quad \dots(1.1)$$

जहाँ A = स्वायत्त व्यय,

a = स्वायत्त व्यय गुणक,

b = ब्याज दर के प्रति निवेश फलन की संवेदनशीलता, और

i = ब्याज दर।

उक्त वक्र का आलेखन करते समय (देखें चित्र 1.1) हम उत्पादन (Y) को x-अक्ष पर और ब्याज दर (i) को y-अक्ष पर दर्शाते हैं। तदनुसार, IS वक्र का प्रावण्य ($\frac{di}{dY}$), जैसा कि हमें समीकरण (1.1) से ज्ञात होता है, $-\frac{1}{ab}$ होगा (समीकरण (1.1) को हमें नये क्रम में रखना होगा और i को Y के पदों में निर्दिष्ट करना होगा, और फिर समीकरण अवकलित करना होगा)। समीकरण (1.1) से, बहरहाल, ज्ञात होता है कि ब्याज दर में कोई भी ज्ञात परिवर्तन ab के वृहत्तर मान हेतु आय के स्तर में किसी वृहत्तर ही परिवर्तन की ओर प्रवृत्त करेगा। इसका अर्थ है कि यदि स्वायत्त व्यय गुणक (a) अथवा ब्याज दर के प्रति निवेश व्यय की संवेदनशीलता (b) अथवा दोनों का गुणनफल (ab) वृहत्तर होगा तो ब्याज दर में परिवर्तन भी वृहत्तर ही होगा। हमने यह भी देखा है कि IS वक्र स्वायत्त व्यय A में किसी परिवर्तन के कारण अथवा a के मान में किसी परिवर्तन के कारण अपनी जगह से खिसक भी सकता है।

तदनुसार, कोई विस्तारकारी राजकोषीय नीति, कोई निवेश परिदान, प्रत्येक ब्याज दर पर उच्चतर निवेश की ओर प्रवृत्त करते निवेशकों का इष्टतमीकरण, स्वायत्त उपभोग में कोई वृद्धि, आदि किसी भी बंद अर्थव्यवस्था में IS वक्र को दाएँ खिसकाने वाले होते हैं (देखें चित्र 1.1)। दूसरा, चल निधि अर्थात् LM वक्र (BECC 103 की इकाई 13 देखें) i और Y का संयोजन दर्शाता है, जहाँ मुद्रा बाजार संतुलन में होता है। आपको याद ही होगा कि LM वक्र ऊर्ध्वमुखी प्रवण होता है।

इसे निम्नलिखित समीकरण से दर्शाया जाता है –

$$\overline{M} / P = kY - hi \quad \dots(1.2)$$

जैसा कि समीकरण (1.2) से स्पष्ट है, LM वक्र का प्रवणता $\frac{k}{h}$ है (पुनः, आय को यह समीकरण नये क्रम में रखना होगा, चर (i) को चर Y के पदों में निर्दिष्ट करना होगा और फिर इसे अवकलित करना होगा)। इस वक्र में किसी भी दाएँ खिसकाव (देखें चित्र 1.1) का अर्थ यह होगा कि मुद्रा बाजार संतुलन प्रत्येक बचत दर के अनुरूप उच्चतर आय स्तर पर अथवा प्रत्येक आय स्तर के अनुरूप किसी निम्नतर ब्याज दर पर होती है। किसी बाएँ अथवा अंतर्मुखी खिसकाव का अर्थ होता है – उत्क्रम अर्थात् उल्टा। यह वक्र मुद्रा आपूर्ति (वास्तविक) में किसी वृद्धि अथवा मुद्रा माँग में किसी गिरावट के प्रत्युत्तर में नीचे (अथवा दाएँ) खिसकता है। तथापि, चल निधि जाल की कोई भी स्थिति मुद्रा माँग को ब्याज दर के प्रति असीम रूप से उत्तरदायी बना देती है और संवादी LM वक्र उस ब्याज दर पर समतल हो जाता है। इस स्थिति में, मुद्रा आपूर्ति में कोई भी परिवर्तन LM वक्र खिसकाने में विफल रहती है।

1.2.1 वस्तु व मुद्रा बाजारों में सहकालिक संतुलन

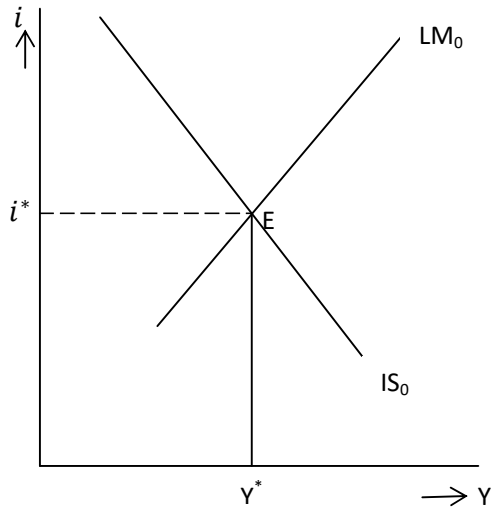
उक्त IS और LM वक्रों का प्रतिच्छेदन i और Y के संतुलन स्तर दर्शाता है। आइए, साम्य आय स्तर और साम्य ब्याज दर एक साथ अवकलित करने के लिए IS और LM वक्रों को एक जगह लाते हैं।

समीकरण (1.1) व (1.2) एक साथ हल करने पर हमें निम्नलिखित समीकरण प्राप्त होता है –

$$Y = \gamma A + \beta \frac{M}{P} \quad \dots (1.3)$$

$$\text{यहाँ, } \gamma = \frac{h\alpha}{h+\alpha bk} \text{ और } \beta = \gamma \frac{b}{h}$$

उक्त IS और LM वक्रों के प्रतिच्छेदन से हमें उत्पादन और ब्याज दरों के संतुलन स्तर ज्ञात होते हैं। चित्र 1.1 में साम्य ब्याज दर i^* है और साम्य आय स्तर Y^* है। ये संतुलन स्तर (i) केवल IS वक्र, (ii) केवल LM वक्र, और (iii) IS व LM दोनों वक्रों में खिसकाव के कारण बदल सकते हैं। आइए, संतुलन i और संतुलन Y पर इन वक्रों में खिसकाव के प्रभाव पर एक विहंगम दृष्टि डालें।



चित्र 1.1: साम्य उत्पादन एवं ब्याज दर

1.2.2 राजकोषीय नीति और निवेश पलायन

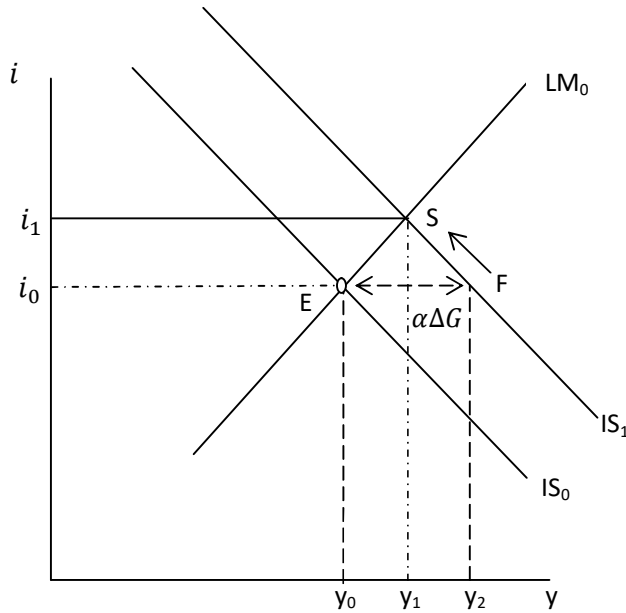
हमें ज्ञात है कि कोई भी विस्तारकारी राजकोषीय नीति (जैसे सरकारी व्यय में वृद्धि और कर दर में कटौती) IS वक्र को दाएँ खिसका देती है। इसके विपरीत, कोई भी संकुचनकारी राजकोषीय नीति IS वक्र को बाएँ खिसका देती है। ऐसे में संतुलन i और Y का क्या होता है? अब चित्र 1.2 पर दृष्टि डालें।

मान लीजिए कि आरंभिक वक्र IS_0 और LM_0 हैं; जो बिंदु E पर संतुलन दर्शाते हैं। बिंदु ΔG तक सरकारी व्यय में कोई भी वृद्धि IS वक्र को IS_0 से खिसकाकर IS_1 पर ले आती है। इस IS वक्र में दाएँ खिसकाव $\alpha\Delta G$ की सीमा तक होता है, यथा चित्र 1.2 में दूरी EF तक।

ध्यान देने की बात है कि मुद्रा बाजार के अभाव में नयी संतुलन बिंदु F पर होगी। उत्पादन Y_1 से बढ़कर Y_2 पर चला जाएगा और ब्याज दर (i_0) में कोई परिवर्तन नहीं होगा। बहरहाल, यहाँ ऐसा नहीं होगा क्योंकि हम मुद्रा बाजार को भी शामिल करके चलेंगे। बिंदु F वित्त बाजारों में मुद्रा की अत्यधिक माँग को निरूपित करता है। यह ऋणपत्रों की बिक्री की ओर अग्रसर करता है – प्रतिभूति मूल्यों में गिरावट और ब्याज दर में वृद्धि।

ब्याज बढ़ने से वित्त बाजारों में संतुलन लौट आती है और अर्थव्यवस्था खिसककर बिंदु S पर पहुँच जाती है जहाँ एक बार फिर दोनों बाजार संतुलन में होते हैं। परंतु ब्याज दर में यह वृद्धि निवेश में गिरावट की ओर ले जाती है और इससे उत्पादन स्तर भी गिर जाता है (नये IS वक्र, IS_1 पर F से S तक खिसकाव)। अंततः संतुलन बिंदु S पर ब्याज दर i_1 और आय स्तर Y_1 के साथ नजर आती है।

आप देखेंगे कि ब्याज दर मूल और उत्पादन स्तर दोनों से कहीं ऊँची है; हालाँकि मूल से ऊँची होने के बावजूद वह उस स्थिति से नीचे ही है जहाँ उसे मुद्रा बाजार के अभाव में देखा जाता। उत्पादन में समग्र वृद्धि $\gamma\Delta G$ के समान है जो कि $\alpha\Delta G$ से नीचे अवस्थित है। ऐसा निवेश के पलायन या 'क्राउडिंग आउट (crowding out)' की वजह से है।



$$Y_0 Y_1 = \gamma \Delta G$$

चित्र 1.2: निवेश पलायन प्रभाव

क्राउडिंग आउट अर्थात् निवेश पलायन दूर करने का अर्थ है – सार्वजनिक व्यय (G) में वृद्धि की वजह से निजी व्यय (इस उदाहरण में, निवेश) में कटौती। यह प्रक्रिया इसलिए होती है कि सरकारी खर्च में कोई भी वृद्धि आय में वृद्धि के साथ-साथ मुद्रा माँग में भी वृद्धि कर देती है, जो कि ब्याज दर में वृद्धि और निवेश जैसे निजी व्यय में परिणामी गिरावट की ओर अग्रसर करता है।

निवेश पलायन दूर करने की यह प्रक्रिया जितनी अधिक होगी उतनी ही अधिक निजी व्यय में गिरावट देखी जाएगी और आय में समग्र वृद्धि घट जाएगी। तदनुसार, राजकोषीय नीति की प्रभाविता (आय राशियों में परिवर्तन) निवेश पलायन की सीमा पर विलोमतः निर्भर करता है। दूसरे शब्दों में, राजकोषीय नीति की प्रभाविता α , b , h और k प्राचलों पर निर्भर करती है।

आइए, इस बात को समझने के लिए शृंखला नियम का प्रयोग करें –

$$\uparrow G \rightarrow (\alpha) \uparrow Y \rightarrow (k) \uparrow M_d \rightarrow (h) \uparrow i \rightarrow (b) \downarrow I \rightarrow (\alpha) \downarrow Y \quad \dots (1.4)$$

यहाँ कोष्ठक में दिए गए प्राचल परिवर्तन की सीमा दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, k का कोई भी उच्चतर मान राजकोषीय नीति को कम प्रभावी बना देता है। चर k का वृहत्तर मान मुद्रा माँग में वृहत्तर वृद्धि की ओर प्रवृत्त करता है। चर h , का मान ज्ञात होने पर, चर k का उच्चतर मान ब्याज दर में वृहत्तर वृद्धि की ओर अग्रसर करता है। ब्याज दर में वृद्धि मुद्रा की माँग घटा देती है और संतुलन फिर से ले आती है। ब्याज दर में उच्चतर वृद्धि निवेश में भी बड़ी गिरावट की ओर प्रवृत्त करती है (b का मान ज्ञात होने पर)। निवेश में कोई भी बड़ी गिरावट आय अथवा उत्पादन में (α का मान ज्ञात होने पर) किसी बड़ी गिरावट की ओर ले जाती है। इस प्रकार, निवेश पलायन की सीमा अपेक्षाकृत ऊँची होती है और राजकोषीय नीति कम प्रभावी। आगे आप अन्य प्राचलों (जैसे h , b और α) के मान लेकर उत्पादन स्तर पर उनके प्रभाव स्वयं ज्ञात कर सकते हैं।

उक्त परिणाम निम्नवत् संक्षेपित किए जा सकते हैं –

उच्चतर $k \rightarrow$ राजकोषीय नीति कम प्रभावी है

उच्चतर $h \rightarrow$ राजकोषीय नीति अधिक प्रभावी है

उच्चतर $b \rightarrow$ राजकोषीय नीति कम प्रभावी है

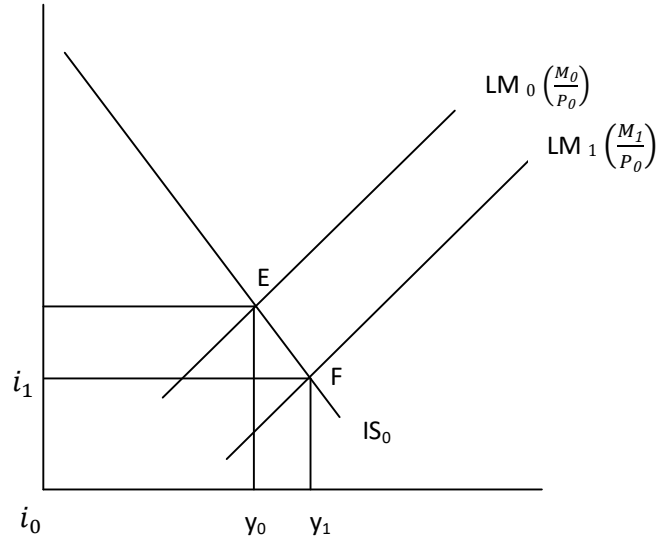
उच्चतर $\alpha \rightarrow$ राजकोषीय नीति अधिक प्रभावी है।

राजकोषीय नीति प्राचल γ को देखकर आप इन परिणामों को बीजगणित की पद्धति से जाँच सकते हैं। समीकरण (1.1) से हमें ज्ञात है कि $\gamma = \frac{h\alpha}{h+abk}$ । यह समीकरण दर्शाता है कि वास्तविक मुद्रा आपूर्ति का स्तर ज्ञात होने पर, चर A में कोई भी वृद्धि चर Y में $\gamma\Delta A$ की राशि तक किसी वृद्धि की ओर ले जाती है। चर h और α के उच्चतर मान γ के मान में किसी वृद्धि की ओर प्रवृत्त करते हैं जबकि b और k के उच्चतर मान γ के किसी निम्नतर मान की ओर ले जाते हैं।

1.2.3 मौद्रिक नीति और हस्तांतरण क्रियातंत्र

आइए, अब उपर्युक्त उपपत्ति मौद्रिक नीति के लिए दोहराते हैं। हमें ज्ञात है कि कोई भी विस्तारकारी मौद्रिक नीति LM वक्र को नीचे की ओर अथवा दाएँ खिसका देती है जबकि कोई भी संकुचनकारी मौद्रिक नीति LM वक्र को बाएँ अथवा ऊपर की ओर खिसकाती है (देखें BECC- 103 की इकाई 13)। ऐसे में संतुलन i व Y का क्या होता है? इसके लिए चित्र 1.3 को ध्यान से देखें। आरंभिक संतुलन बिंदु E पर है, जहाँ IS_0 और LM_0 का

प्रतिच्छेदन होता है। आप देखेंगे कि जब मात्रिक शेयर मुद्रा M_0 हो और मूल्य स्तर P_0 हो तो LM_0 मुद्रा बाजार में संतुलन दर्शाता है।



चित्र 1.3: हस्तांतरण क्रियातंत्र

मान लीजिए कि M_0 से M_1 तक मात्रिक शेयर मुद्रा में कोई वृद्धि होती है। यदि मूल्य स्तर नहीं बदलता है (यथा, P_0 पर ही रहता है) तो इससे वास्तविक मुद्रा आपूर्ति बढ़ जाती है। माना LM_1 हमारा नया LM वक्र है। चित्र 1.3 में हम देखते हैं कि IS_0 और IS_1 के बीच प्रतिच्छेदन बिंदु F पर होता है। ब्याज दर i_0 से घटकर i_1 पर आ जाती है और उत्पादन/आय स्तर Y_0 से बढ़कर Y_1 पर आ जाता है। इस प्रकार, मुद्रा आपूर्ति में कोई भी वृद्धि साम्य उत्पादन स्तर को ऊपर ले जाती है। ऐसा इसलिए होता है कि मुद्रा आपूर्ति में कोई भी वृद्धि मुद्रा बाजार को असंतुलन की स्थिति में धकेल देती है और संतुलन बहाल करने के लिए (वास्तविक शेष राशि की माँग बढ़ाकर) ब्याज दर में गिरावट लानी पड़ती है। ब्याज दर में यह गिरावट, बदले में, वस्तु बाजार को प्रभावित करती है जिससे निवेश व्यय और समग्र व्यय दोनों बढ़ते हैं।

समग्र व्यय में वृद्धि से साम्य उत्पादन स्तर में भी बढ़ोतरी होती है। यह IS वक्र के साथ बिंदु E से बिंदु F तक एक अधोमुखी झुकाव में देखा जा सकता है। इस प्रक्रिया को हस्तांतरण क्रियातंत्र कहा जाता है, जिसके द्वारा मुद्रा बाजार वस्तु बाजार के जरिए आय पर अपना प्रभाव 'हस्तांतरित' करता है। मौद्रिक नीति की प्रभावित हस्तांतरण क्रियातंत्र की मजबूती पर ही निर्भर करती है, जबकि हस्तांतरण क्रियातंत्र की मजबूती प्राचलों α , b , h और k पर निर्भर करती है। आइए, उस प्रक्रिया को देखें जिसके माध्यम से यह अपना काम करती है –

$$\uparrow M_s \rightarrow \uparrow M/P \rightarrow (k \text{ और } h) \downarrow i \rightarrow (b) \uparrow I \rightarrow (\alpha) \uparrow Y \quad \dots (1.5)$$

यहाँ कोष्ठक में दिए गए प्राचल उत्पादन में परिवर्तन की सीमा दर्शाते हैं। ये प्राचल मौद्रिक नीति की प्रभावितता पर किस प्रकार असर डालते हैं? मुद्रा आपूर्ति में कोई भी वृद्धि (M_s) मुद्रा बाजार को असंतुलन की स्थिति में ले जाने लगती है। जन साधारण ऋणपत्र खरीदकर इस मुद्रा आधिक्य से छुटकारा पाने का प्रयास करता है। इससे ऋणपत्रों के दाम बढ़ जाते हैं और ब्याज दरें घट जाती हैं। ब्याज दर में यह गिरावट मुद्रा की माँग बढ़ा देती है, और इस प्रकार, मुद्रा बाजार में संतुलन लौट आती है। प्राचल h का मान जितना कम होगा (अथवा, ब्याज दर के प्रति मुद्रा माँग की संवेदनशीलता जितनी कम होगी), ब्याज दर में वांछित गिरावट उतनी अधिक होगी (ताकि k का मान ज्ञात होने पर,

मुद्रा बाजार में संतुलन बहाली के लिए मुद्रा माँग यथेष्ट रूप से बढ़े। तदंतर, यह निवेश में वृहत्तर वृद्धि (b का मान ज्ञात होने पर) और बेहतर आय (α का मान ज्ञात होने पर) की ओर प्रवृत्त करता है। इस प्रकार, h के किसी निम्नतर मान का अर्थ होगा कि मौद्रिक नीति अधिक प्रभावी है। जहाँ तक कि k अथवा आय के प्रति मुद्रा माँग की संवेदनशीलता का संबंध है, निम्नतर k का अर्थ होगा कि मुद्रा बाजार संतुलन की पुनर्बहाल ब्याज दर पर कहीं अधिक निर्भर होती है और इसीलिए ब्याज दर में किसी बड़ी गिरावट की आवश्यकता होती है।¹ यह फिर निवेश व आय (b और α ज्ञात होने पर) में वृहत्तर वृद्धि की ओर अग्रसर करता है।

आइए, अब मौद्रिक नीति की प्रभाविता पर b और α के प्रभाव पर दृष्टि डालें। ब्याज दर में कोई भी ज्ञात कमी (मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि के परिणामस्वरूप) निवेश में वृहत्तर वृद्धि (b का वृहत्तर मान), और इस प्रकार, आय में किसी वृहत्तर वृद्धि की ओर प्रवृत्त करती है। पुनः ब्याज दर में ज्ञात कोई भी गिरावट (मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि के फलस्वरूप) निवेश में किसी वृद्धि (b ज्ञात होने पर) की ओर प्रवृत्त करती है और निवेश में यह वृद्धि आय में किसी बड़ी वृद्धि की ओर प्रवृत्त करती है, बशर्ते α का मान उच्चतर हो। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि b व α के उच्चतर मान मौद्रिक नीति को कहीं अधिक प्रभावी बना देते हैं।

समीकरण (1.1) से हमें ज्ञात है कि जब $A=0$, $\beta = \gamma \frac{b}{h}$ हो तो β आय स्तर पर मुद्रा आपूर्ति में परिवर्तनों का प्रभाव दर्शाता है, जबकि $\beta = \gamma \frac{b}{h}$ मौद्रिक नीति का गुणक मात्र ही होता है।

समीकरण $\gamma = \frac{h\alpha}{h+abk}$ को प्रतिस्थापित करे हमें $\beta = \frac{h\alpha}{h+abk} \frac{b}{h}$ प्राप्त होता है और मौद्रिक नीति की प्रभाविता को α , b , h और k के मानों पर निर्भर होता देखा जा सकता है।

निम्नतर $k \rightarrow$ मौद्रिक नीति अधिक प्रभावी है

निम्नतर $h \rightarrow$ मौद्रिक नीति अधिक प्रभावी है

उच्चतर $b \rightarrow$ मौद्रिक नीति अधिक प्रभावी है

उच्चतर $\alpha \rightarrow$ मौद्रिक नीति अधिक प्रभावी है।

बोध प्रश्न 1

- मान लीजिए कि निवेश ब्याज दर के प्रति असंवेदनशील है, जैसा कि व्यापार मंदी के दौरान देखा जा सकता है। आय बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा की जाने वाली कोई एक कार्रवाई सुझाएँ। अपने उत्तर की उपपत्ति स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

¹ अत्यधिक मुद्रा आपूर्ति के साथ, मुद्रा की माँग में किसी वृद्धि को लेकर मुद्रा बाजार में साम्यावस्था लौट आती है, जो कि आय में किसी वृद्धि और ब्याज दर में गिरावट दोनों की वजह से होता है। यदि k का मान कम है तो मुद्रा की माँग आय के प्रति अधिक संवेदनशील नहीं होती, और इस प्रकार, ब्याज दर वांछित मुद्रा माँग बढ़ाने में एक बड़ी भूमिका निभाती है।

2. क्या मौद्रिक नीति चल निधि जाल की दशाओं में आय बढ़ा सकती है? अपना उत्तर स्पष्ट करें।

.....

.....

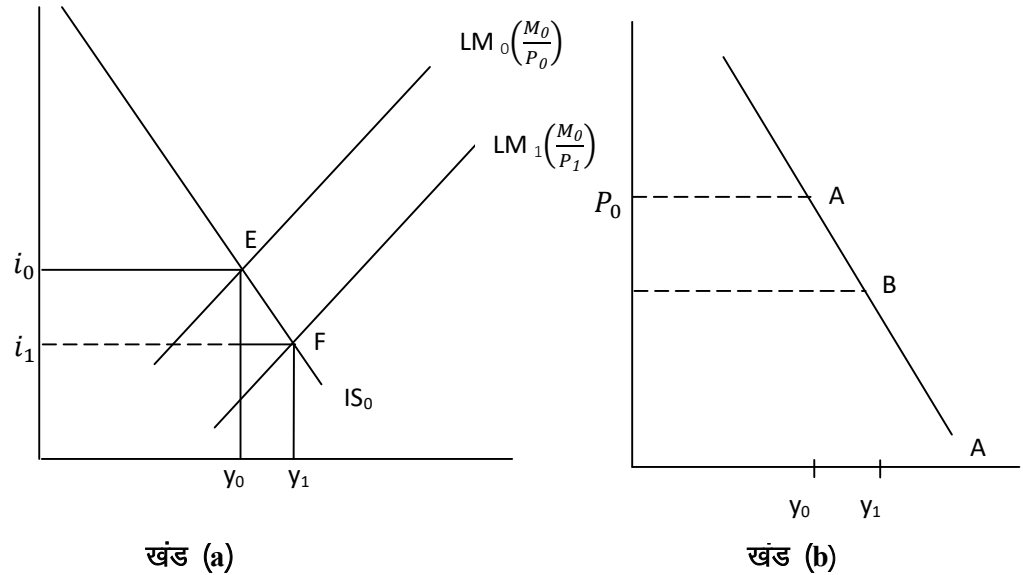
.....

.....

1.3 समग्र माँग वक्र

राजकोषीय और मौद्रिक परिवर्तनों का प्रभाव, जैसा कि हमने ऊपर चर्चा की, नियत मूल्य स्तर की अवधारणा पर आधारित है। मूल्य स्तर में कोई भी परिवर्तन वास्तविक मुद्रा आपूर्ति में बदलाव ले आता है, LM वक्र को खिसका देता है (किसी ज्ञात मात्रिक मुद्रा आपूर्ति के साथ) और ब्याज दर के साम्य स्तर व उत्पादन स्तर में बदलाव कर देता है। यदि हम मूल्य स्तरों में निरंतर बदलाव करते रहें तो हमें साम्य उत्पादन के विभिन्न स्तर मिलते ही रहेंगे। कीमत या 'मूल्य' एवं 'उत्पादन/आय' का वह संयोजन जहाँ वस्तु एवं मुद्रा बाजार युगपत संतुलन में होते हैं, समग्र माँग (AD) वक्र दर्शाता है।

नीचे चित्र 1.4 में IS-LM वक्रों से AD वक्र का अवकलन किया गया है। इस चित्र का खंड (a) IS_0 और LM_0 वक्र दर्शाता है, जो एक साम्य आय स्तर, Y_0 , के साथ बिंदु E पर प्रतिच्छेदन करते हैं। यहाँ LM_0 वक्र M_0/P_0 के वास्तविक मुद्रा भंडार पर आधारित है। तदनुसार, खंड (b) में AD वक्र पर P_1 , और Y_0 , का संयोजन ही बिंदु A है। मूल्य स्तर में P_1 , की गिरावट के साथ, वास्तविक मुद्रा भंडार बढ़कर $\frac{M_0}{P_1}$ पर चला जाता है (यहाँ वास्तविक मुद्रा आपूर्ति मूल्य स्तर में गिरावट के कारण बढ़ती है, न कि मात्रिक मुद्रा भंडार में किसी वृद्धि के कारण) और LM वक्र खिसककर LM_1 पर पहुँच जाता है। इस चित्र का खंड (a) दर्शाता है कि LM वक्र में परिवर्तन के साथ, ब्याज दर गिरकर i_1 पर आ जाती है और आय स्तर Y_1 तक बढ़ जाता है। इस प्रकार, P_1 और Y_1 का संयोजन AD वक्र पर बिंदु B बन जाता है।



चित्र 1.4: AD वक्र का अवकलन

यह AD वक्र कीमत और उत्पादन में एक नकारात्मक संबंध दर्शाते हुए अधोमुखी प्रवण होता है। ऐसा इसलिए है कि मूल्य स्तर में कोई भी गिरावट वास्तविक मुद्रा आपूर्ति बढ़ा देती है, जो मुद्रा बाजार को असंतुलन की स्थिति में ले आता है। ब्याज दर में कोई भी कटौती मुद्रा बाजार में संतुलन वापस ले आती है। ब्याज दर घटने से निवेश व्यय और माँग का स्तर बढ़ता है, जिससे आय का स्तर ऊपर चला जाता है।

1.3.1 AD वक्र की प्रवणता

यदि मूल्य में कोई ज्ञात परिवर्तन आय में किसी वृहत्तर परिवर्तन की ओर प्रवृत्त करता है तो AD वक्र अपेक्षाकृत अधिक समतल होता है। दूसरी ओर, यदि मूल्य में कोई ज्ञात परिवर्तन आय में किसी लघुतर वृद्धि की ओर प्रवृत्त करता है तो AD वक्र अपेक्षाकृत अधिक ढालू होता है। इस AD वक्र की प्रवणता प्राचलों α , b , h और k पर निर्भर करती है।

$$\downarrow P \rightarrow \uparrow M/P \rightarrow (K \text{ और } h) \downarrow i \rightarrow (b) \uparrow I \rightarrow (\alpha) \uparrow Y \quad \dots (1.6)$$

यह उपपत्ति ऊपर दी गई उस उपपत्ति से बहुत मिलती-जुलती है जो मौद्रिक नीति की प्रभावित को स्पष्ट करती है (देखें पाठांश 1.2.3)। मूल्य में किसी गिरावट और फिर उससे वास्तविक शेष राशि में किसी वृद्धि के चलते मुद्रा बाजार संतुलन से बाहर हो जाता है। अब, h का मान जितना कम होगा अथवा ब्याज दर के प्रति मुद्रा माँग की संवेदनशीलता जितनी कम होगी, मुद्रा बाजार में संतुलन (k का मान ज्ञात होने पर) की पुनर्बहाली हेतु मुद्रा माँग यथेष्ट रूप से बढ़ाने के लिए ब्याज दर में वांछित गिरावट उतनी ही अधिक होगी। तदंतर, यह निवेश में (b ज्ञात होने पर) किसी वृहत्तर वृद्धि और वृहत्तर आय (α ज्ञात होने पर) की ओर प्रवृत्त करता है। तदनुसार, निम्नतर h का अर्थ होगा कि मूल्य में यही परिवर्तन आय में किसी वृहत्तर परिवर्तन की ओर प्रवृत्त करता है, और इस प्रकार, AD वक्र पहले से अधिक समतल प्राप्त होता है। अन्य प्राचलों के प्रभाव की उपपत्ति भी पिछले पाठांश के आधार पर प्रस्तुत की जा सकती है।

उक्त परिणाम निम्नवत् संक्षेपित किए जा सकते हैं—

निम्नतर $k \rightarrow$ AD वक्र पहले से अधिक समतल है

निम्नतर $h \rightarrow$ AD वक्र पहले से अधिक समतल है

उच्चतर $b \rightarrow$ AD वक्र पहले से अधिक समतल है

उच्चतर $\alpha \rightarrow$ AD वक्र पहले से अधिक समतल है।

1.3.2 AD वक्र का खिसकाव

किसी राजकोषीय अथवा मौद्रिक विस्तार के परिणामस्वरूप AD वक्र दाएँ खिसकता है अथवा ऊपर की ओर बढ़ता है जबकि कोई भी राजकोषीय अथवा मौद्रिक संकुचन AD वक्र को बाएँ (अथवा नीचे की ओर) खिसका देता है। ऐसा कोई भी कारक जो IS वक्र अथवा LM वक्र को दाएँ खिसका देता है, AD वक्र को दाएँ खिसकाए जाने की ओर अग्रसर करता है। इस प्रकार, सरकारी खर्च में वृद्धि जैसे स्वायत्त व्यय के किसी भी अवयव में वृद्धि AD वक्र को दाएँ खिसकाए जाने की ओर प्रवृत्त करती है। साथ ही, मात्रिक मुद्रा आपूर्ति में कोई भी वृद्धि AD वक्र को ऊपर की ओर खिसका देती है।

आइए, अब उन कारकों पर विस्तार से चर्चा करें जो AD वक्र में खिसकाव ला देते हैं और ऐसे बदलावों की प्रकृति भी समझने का प्रयास करें —

निवेश : जब फर्म भविष्य के विषय में आशान्वित होती हैं तो वे अपना निवेश बढ़ाने की योजना बनाती हैं। कंप्यूटर में प्रौद्योगिकीय उन्नति, उदाहरण के लिए, समग्र माँग में वृद्धि

की ओर प्रवृत्त करती है, जो कि AD वक्र को दाएँ खिसका देता है। इसके विपरीत, यदि फर्म भावी व्यापार दशाओं के विषय में निराशावादी रवैया रखती हों तो वे आगे और निवेश से हाथ खींच लेंगी। इससे AD वक्र बाएँ खिसक जाएगा।

उपभोग : मान लीजिए कि आर्थिक परिवेश में कुछ परिवर्तन ऐसे होते हैं कि परिवार आय के हर स्तर पर कोई उच्चतर राशि बचाने लगते हैं। ऐसा सरकार द्वारा प्रदत्त कुछ प्रोत्साहनों अथवा बचत पर ब्याज दर में किसी वृद्धि की वजह से हो सकता है। बचत में कोई भी वृद्धि उपभोग में कटौती का प्रभाव दर्शाएगी। उपभोग में कमी के कारण AD वक्र में बाईं ओर खिसकाव देखा जाएगा। चलिए, एक और परिदृश्य पर विचार करते हैं। मान लीजिए कि शेयर बाजार में उछाल आया हुआ है, जिससे परिवारों को अप्रत्याशित लाभ मिलेंगे। यह उपभोग में अप्रत्याशित वृद्धि की ओर अग्रसर करेगा। इससे उपभोग में वृद्धि संभावित है, जो कि AD वक्र को दाएँ खिसका देगा।

राजकीय व्यय : राजकीय क्रय में परिवर्तन की वजह से यदि हम नियत राजकीय क्रय संबंधी अवधारणा न भी मानें और इसे लोचदार मानकर चलें तब भी यही नीति-निर्माताओं द्वारा प्रयुक्त ऐसा सबसे सीधा रास्ता है जो समग्र माँग वक्र को खिसका देता है। यदि सरकारी खरीद में वृद्धि होती है तो AD वक्र दाएँ खिसक जाता है, और इसका विपरीत भी सत्य है।

कराधान : एक अन्य कारक जो AD वक्र में खिसकाव ले आता है, काराधान स्तर में परिवर्तन है। यदि कर दरों में वृद्धि होती है तो प्रयोज्य आय के स्तर में गिरावट आती है। परिवारों की प्रयोज्य आय में कोई भी कटौती समग्र उपभोग में गिरावट की ओर ले जाती है। दूसरी ओर, यदि कर दर में कमी होती है तो परिवारों के उपभोग में वृद्धि देखी जाती है। कुछ ऐसे कर होते हैं जो निवेश को प्रभावित करते हैं। यदि निवेश कर ऋण बढ़ता है (यह किसी फर्म के निवेश व्यय से जुड़ी कर छूट होता है) तो इससे निवेश बढ़ता है और इस कारण AD वक्र दाएँ खिसक जाता है।

निवल निर्यात : निवल निर्यात को निर्यात घटा आयात ($X - M$) के रूप में परिभाषित किया जाता है। यदि आयात अचर रहने पर निर्यात में (X) में कोई वृद्धि होती है तो निवल निर्यात (NX) बढ़ेगा। इसी प्रकार, यदि निर्यात अपरिवर्तित रहे तो आयात घटने पर NX में वृद्धि देखी जाएगी। आइए, एक उदाहरण के माध्यम से AD वक्र पर NX के प्रभाव पर चर्चा करें। जब यूरोप में व्यापार मंदी छाई होती है, उदाहरण के लिए, तो यूरोप अमेरिका से अपेक्षाकृत कम माल खरीदता है। इससे प्रत्येक मूल्य स्तर पर अमेरिकी निवल निर्यात घट जाता है। यह अमेरिकी अर्थव्यवस्था के AD वक्र को बाएँ खिसका देता है (चित्र 4.2 के खंड (b) की भाँति)। इस प्रकार, हम देखते हैं कि NX में कोई भी गिरावट AD वक्र को बाएँ खिसका देती है। इसी प्रकार, NX में कोई भी वृद्धि AD वक्र को दाएँ खिसका देगी।

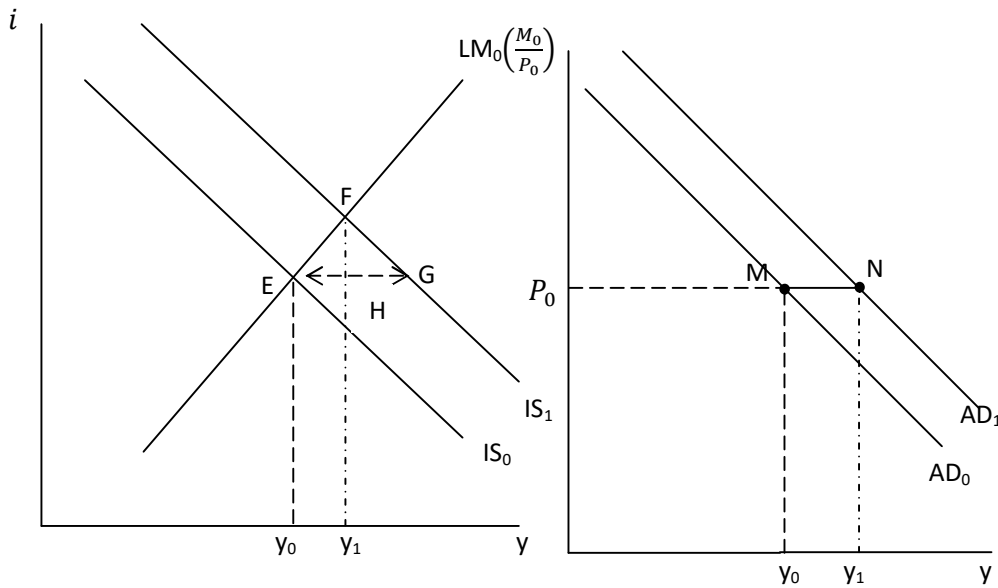
मुद्रा आपूर्ति : मुद्रा आपूर्ति में कोई भी वृद्धि ब्याज दर में गिरावट की ओर ले जाएगी। इससे अर्थव्यवस्था में निवेश व्यय बढ़ सकता है और अंततोगत्वा उत्पादन स्तर ऊपर चला जाता है। यहाँ AD वक्र दाएँ खिसक जाता है। इसी प्रकार, मुद्रा आपूर्ति में कोई भी कमी ब्याज दर में वृद्धि की ओर ले जाएगी। यह निवेश में कमी की ओर प्रवृत्त करेगा, जिसके फलस्वरूप समग्र माँग घट जाएगी। इस प्रकार, मुद्रा आपूर्ति में किसी भी कमी के चलते AD वक्र बाएँ खिसक जाएगा।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उपर्युक्त सभी उदाहरणों में मूल्य स्तर अचर रखा गया है। हमने अपनी चर्चा में ऐसे कुछ महत्वपूर्ण कारकों को शामिल किया है जो IS और LM वक्रों को प्रभावित करते हैं।

मूल्यस्तर भी LM वक्र को प्रभावित करता है। परंतु यह AD वक्र के खिसकाव में परिणत नहीं होता; बल्कि P में कोई भी परिवर्तन AD वक्र के एक छोर से दूसरे छोर तक बदलाव की ओर प्रवृत्त करता है।

1.3.3 राजकोषीय नीति और AD वक्र

जैसा कि हमने पिछले पाठांश में देखा, ΔG तक राजकीय व्यय में कोई भी वृद्धि उत्पादन अक्ष के समानांतर IS वक्र को दाएँ $\alpha\Delta G$ तक खिसका देती है। बहरहाल, क्राउडिंग आउट के कारण, साम्य आय में वृद्धि केवल $\gamma\Delta G$ तक ही होती है (जैसा कि ऊपर दर्शाया गया)। इसका अर्थ है कि मूल्य अचर रहने पर आय सरकारी खर्च की वजह से $\gamma\Delta G$ तक बढ़ती है। यदि आप AD वक्र पर नजर डालें तो पाएँगे कि हर कीमत पर, AD वक्र दाएँ, स्वयं के समानांतर $\gamma\Delta G$ तक खिसकता है। यह चित्र 1.5 में दर्शाया गया है। याद रखें कि उत्पादन में परिवर्तन $\gamma\Delta G$ से ही दर्शाया गया है। इस चित्र के खंड (a) व खंड (b) दोनों में यह परिवर्तन दूरी Y_0Y_1 से निरूपित किया गया है।



खंड (a) IS का खिसकाव = $EG = \alpha\Delta G$

खंड (b) AD का खिसकाव = $MN = \gamma\Delta G$

चित्र 1.5: राजकोषीय नीति और AD वक्र का खिसकाव

1.3.4 मौद्रिक नीति और AD वक्र

मात्रिक मुद्रा आपूर्ति में कोई भी वृद्धि LM वक्र को दाएँ खिसका देती है। यह AD वक्र के दाएँ आनुपातिक खिसकाव की ओर प्रवृत्त करता है। मात्रिक मुद्रा आपूर्ति में यह वृद्धि प्रत्येक मूल्य स्तर पर आय में किसी वृद्धि में परिणत होती है। बहरहाल, यह खिसकाव समानांतर होने की बजाय आनुपातिक ही क्यों होता है? इस बात को समझने के लिए, आइए, AD वक्र के खिसकाव पर नजर डालें, जो कि किसी दाएँ खिसकाव की बजाय एक ऊर्ध्वमुखी खिसकाव है। दूसरे शब्दों में, मुद्रा आपूर्ति में कुछ वृद्धि के कारण हम प्रत्येक आय स्तर पर मूल्य में वृद्धि देख रहे हैं। मुद्रा-परिमाण सिद्धांत (QTM) के अनुसार, आय स्तर नियत और संचलन वेग अचर रहने पर कीमतें मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि के अनुपात में ही बढ़ती हैं।

$$M\bar{V} = P\bar{Y}$$

... (1.7)

तदनुसार, मुद्रा आपूर्ति का द्विगुणन प्रत्येक आय स्तर पर मूल्यों के द्विगुणन की ओर प्रवृत्त करता है, जिससे AD वक्र में एक आनुपतिक खिसकाव देखा जाता है (देखें चित्र 1.6)।

इस प्रकार, विस्तारकारी नीतियाँ, राजकोषीय व मौद्रिक दोनों, AD वक्र को दाएँ (अथवा ऊपर की ओर) खिसका देती हैं जबकि संकुचनकारी नीतियाँ AD वक्र के बाएँ (अथवा नीचे की ओर) खिसकाव की तरफ ले जाती हैं। इस AD वक्र के समीकरण को निम्नवत् लिखा जा सकता है –

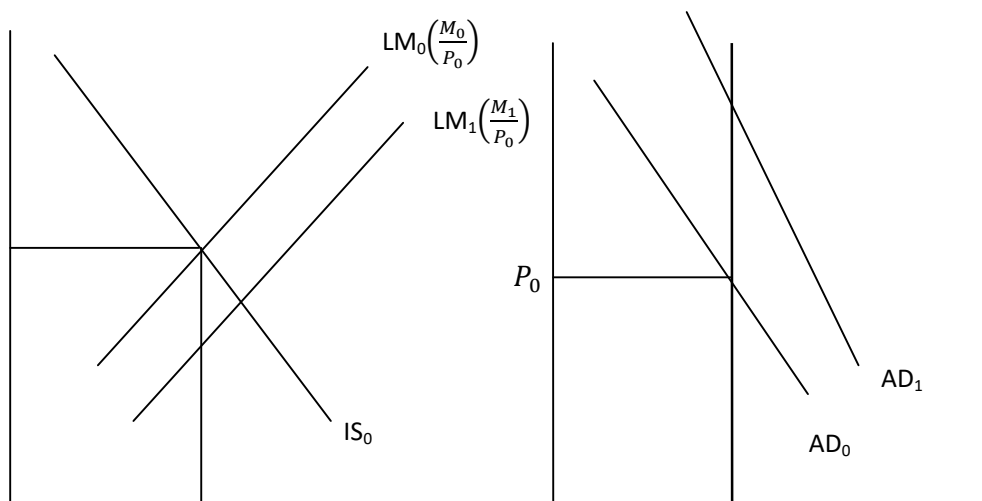
$$Y = \gamma A + \beta \frac{M}{P} \quad \dots (1.8)$$

अथवा

$$P = \frac{\beta M}{\gamma A - Y} \quad \dots (1.9)$$

यहाँ A राजकोषीय-नीति प्राचल है; γ राजकोषीय-नीतिगुणक है; M/P वास्तविक मुद्रा आपूर्ति है; और β मौद्रिक-नीति गुणक है।

किसी नीतिगत परिवर्तन के अलावा, AD वक्र स्वायत्त व्यय A में भी किसी परिवर्तन के कारण खिसक सकता है। समग्र माँग के किसी भी घटक में किसी परिवर्तन के कारण AD वक्र में खिसकावों को माँग आघात भी कहा जाता है।



चित्र 1.6: मौद्रिक नीति और AD वक्र का खिसकाव

1.4 समग्र माँग और समग्र आपूर्ति एक साथ

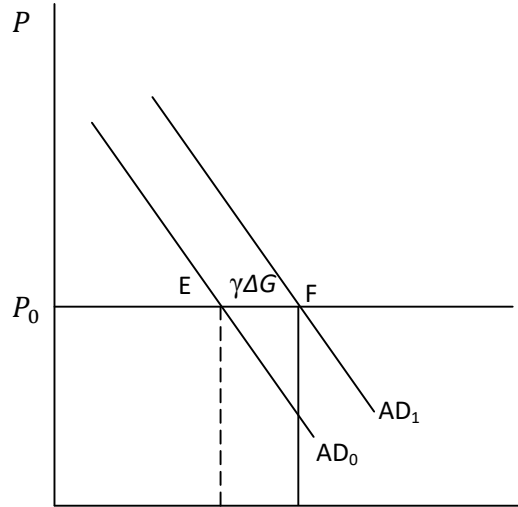
किसी भी अर्थव्यवस्था में आय और मूल्य के साम्य स्तर समग्र माँग (AD) और समग्र आपूर्ति (AS) से ही तय किए जाते हैं। समग्र माँग में कोई भी परिवर्तन जो AD वक्र को खिसकाता है, उत्पादन और मूल्य के साम्य स्तरों में बदलाव ला देता है। इसका परिणामी परिमाण और मूल्य समंजन AS वक्र की स्थिति और प्रवणता पर निर्भर करते हैं। आइए, इस बात को निम्नलिखित स्थितियों के संदर्भ में समझें –

- (i) पूर्णतः लोचदार AS वक्र,
- (ii) पूर्णतः लोचहीन AS वक्र, और
- (iii) ऊर्ध्वमुखी प्रवण AS वक्र।

इस AS वक्र की विशिष्ट प्रवणता श्रम बाजार की दशाओं पर निर्भर करती है।

1.4.1 माँग आघात और पूर्णतः लोचदार AS वक्र

नीचे चित्र 1.7 में AD_0 को उत्पादन Y_0 और मूल्य स्तर P_0 के साथ बिंदु E पर पूर्णतः लोचदार AS का प्रतिच्छेदन करते दर्शाया गया है। इस प्रकार के AS वक्र को प्रायः केन्जियन AS वक्र कहा जाता है और यह श्रम बाजार में पूरी तरह अनम्य वेतन पर आधारित होता है²। यहाँ बिंदु ΔG तक सरकारी खर्च में वृद्धि जैसी कोई भी विस्तारकारी राजकोषीय नीति AD वक्र को दाएँ खिसका कर $\gamma\Delta G$ तक ले जाती है और यह नया AD वक्र AD_1 कहलाता है। जैसा कि इस चित्र से स्पष्ट है, नयी संतुलन को F से दर्शाया जाता है, जहाँ कीमतें अचर रहती हैं जबकि आय $\gamma\Delta G$ तक बढ़ती है। इस स्थिति में, राजकोषीय विस्तार केवल परिमाण में किसी वृद्धि की ओर प्रवृत्त करता है जबकि कीमतें जस की तस रहती हैं।



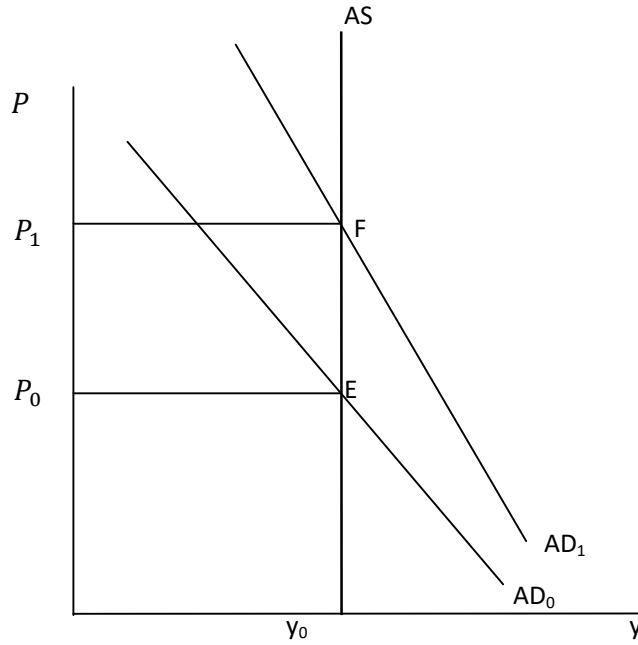
चित्र 1.7: AS वक्र क्षैतिज होने पर माँग आघात का प्रभाव

1.4.2 माँग आघात और पूर्णतः लोचहीन AS वक्र

नीचे चित्र 1.8 में AD_0 को उत्पादन Y_0 और मूल्य स्तर P_0 के साथ बिंदु E पर पूर्णतः लोचदार AS का प्रतिच्छेदन करते दर्शाया गया है। इस प्रकार के AS वक्र को क्लासिकल आपूर्ति वक्र भी कहा जाता है, जो कि उत्पादन के पूर्ण नियोजन स्तर पर पूरी तरह लोचहीन होता है। माना AD वक्र AD_1 तक मौद्रिक विस्तार के कारण आनुपातिक रूप से ऊपर खिसकता है। जैसा कि इस चित्र से सिद्ध होता है, यहाँ उत्पादन जस का तस है जबकि मूल्य स्तर में कुछ बढ़ोतरी है। ऐसा आपूर्ति पक्ष के निवेश पलायन की वजह से है।

जब माँग बढ़ती है तो उत्पादनकर्ता उत्पादन बढ़ाना चाहते हैं, जिसके लिए उन्हें अतिरिक्त श्रमिकों की आवश्यकता होगी। तथापि, चूँकि श्रम बाजार पहले ही पूर्ण नियोजन के अंतर्गत है, उत्पादनकर्ता श्रमिकों को केवल एक दूसरे से कहलवा ही सकते हैं, जिससे वेतन वृद्धि होगी जो फिर मूल्य स्तर बढ़ोतरी की ओर ले जाएगा। यहाँ आय और उत्पादन आपूर्ति दशाओं के कारण कोई वृद्धि नहीं दर्शा सकते और इसीलिए इसे आपूर्ति पक्ष का क्राउडिंग आउट या निवेश पलायन कहा गया है।

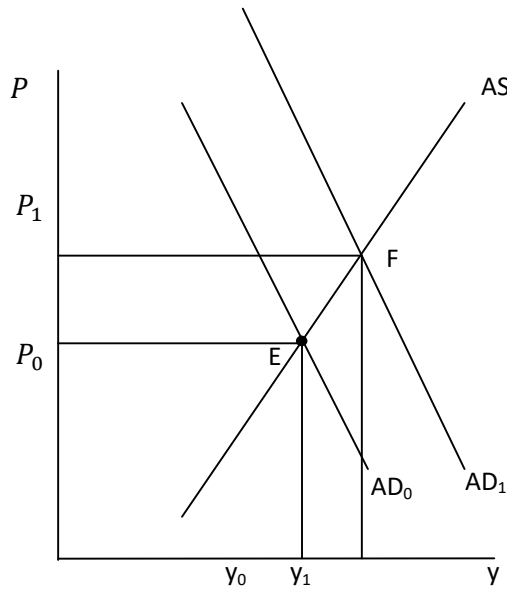
² क्लासिकल अर्थशास्त्री यह मानकर चलते थे कि वेतन दर और मूल्य स्तर लोचदार होते हैं। तत्पश्चात, कीन्स ने यह विचार आगे रखा कि बाजार में अनेक कठोर तत्व विद्यमान होते हैं (देखें BECC-103 की इकाई 9)।



चित्र 1.8: AS वक्र लंबवत् होने पर माँग आघात का प्रभाव

1.4.3 माँग आघात और ऊर्ध्वमुखी प्रवण AS वक्र

इस प्रकार का AS वक्र ऊपर वर्णित दो आत्यंतिक उदाहरणों के बीच अवस्थित होता है और श्रम बाजार में वेतन की पूर्ण लोचता की अपेक्षा कम की अवधारणा पर आधारित होता है। कोई भी अनुकूल माँग आघात उत्पादन व मूल्य दोनों में वृद्धि की ओर प्रवृत्त करती है जबकि कोई भी प्रतिकूल माँग आघात आय और कीमतें घटा देती है। यह चित्र 1.9 में देखा जा सकता है। इससे सिद्ध होता है कि आपेक्षिक परिमाण और मूल्य समंजन AS वक्र की प्रवणता पर निर्भर करते हैं जो कि फलतः श्रम बाजार की दशाओं पर निर्भर करता है।



चित्र 1.9: AS वक्र के ऊर्ध्वमुखी प्रवण होने पर माँग आघात का प्रभाव

बोध प्रश्न 2

1. निम्नलिखित दशाओं के अनुसार AD वक्र खींचकर नामांकित करें –

a) $b = 0$

b) $h = \infty$

.....

.....

.....

.....

.....

2. मान लीजिए कि आय के प्रत्येक स्तर पर मुद्रा की माँग में गिरावट आ गई है। स्पष्ट करें कि यह निम्नलिखित दशाओं के अनुसार उत्पादन एवं मूल्यों के स्तर किस प्रकार प्रभावित करेगा –

a) केन्जियन समग्र आपूर्ति

b) क्लासिकल समग्र आपूर्ति

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 सार–संक्षेप

इस इकाई में हमने IS और LM वक्रों से AD वक्र अवकलित किए। हमने स्पष्ट किया कि वस्तु और मुद्रा बाजारों में सहकालिक संतुलन किस प्रकार अर्थव्यवस्था को साम्य उत्पादन और ब्याज दर प्रदान करती है। उक्त IS-LM वक्रों के आधार पर ही हमने अर्थव्यवस्था के लिए समग्र माँग वक्र अवकलित किया।

हमने AD वक्र की स्थिति, प्रवणता और खिसकावों पर भी चर्चा की। हमने पाया कि समग्र माँग और समग्र आपूर्ति दोनों मिलकर ही अर्थव्यवस्था में साम्य मूल्य और उत्पादन दर्शाते हैं। अगली इकाई में हम AS वक्र अवकलित करेंगे और उन श्रम बाजार दशाओं को समझेंगे जो समग्र आपूर्ति में अंतर्निहित होती हैं।

1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1. चर G में कोई वृद्धि। आय पर पूरा-पूरा विस्तारकारी प्रभाव देखा जाएगा। आय $\alpha \Delta G$ तक बढ़ेगी। ऐसा इसलिए है कि यहाँ $b = 0$ की वजह से कोई क्राउडिंग आउट नहीं है।
2. चल निधि जाल की परिस्थितियों में मौद्रिक नीति अप्रभावी हो जाती है। यहाँ मुद्रा माँग ब्याज-दर परिवर्तनों के प्रति असीम रूप से उत्तरदायी होगी और LM वक्र समतल होगा। मुद्रा आपूर्ति में कोई भी वृद्धि अभिभावी ब्याज दर पर मुद्रा माँग के रूप में समाहित हो जाती है। इस प्रकार, ब्याज दर नहीं बदलती और हस्तांतरण

समग्र माँग एवं
समग्र आपूर्ति

क्रियातंत्र विफल हो जाता है। यहाँ LM वक्र मुद्रा आपूर्ति में परिवर्तनों की वजह से नहीं खिसकता।

बोध प्रश्न 2

1. दोनों ही स्थितियों में AD वक्र आय / उत्पादन के किसी नियत स्तर पर पूर्णतः लोचहीन होगा।
2. मुद्रा माँग में कोई भी कटौती मुद्रा बाजार में अत्यधिक मुद्रा आपूर्ति के समान होता है। यह AD वक्र में दाएँ एक आनुपातिक खिसकाव की ओर प्रवृत्त करता है।
 - a) उत्पादन बढ़ता है मगर कीमतें वही रहती हैं।
 - b) कीमतें बढ़ती हैं मगर उत्पादन वही रहता है।

इकाई 1 परिशिष्ट: IS एवं LM प्रतिमान की बीजगणितीय अभिव्यक्ति

A1.1 IS एवं LM वक्र की परस्पर क्रिया

निम्नलिखित IS एवं LM के लिए समीकरण, बीईसीसी 103 की इकाई 14 में दिए गए हैं: -

$$\text{IS समीकरण} \quad Y = \alpha_G (\bar{A} - bi) \quad \dots(\text{A.1})$$

$$\text{LM समीकरण} \quad i = \frac{1}{h} \left(kY - \frac{\bar{M}}{P} \right) \quad \dots(\text{A.2})$$

आरेखीय IS एवं LM वक्र परस्पर को काटते हैं। वह ब्याज एवं उत्पादन का एक विशेष स्तर होता है, जहाँ IS एवं LM वक्र समान होते हैं।

(A.1) और (A.2) समीकरण को समान किया जा सकता है। (A.2) में दिए गए ब्याज दर को IS समीकरण (A.1) में प्रतिस्थापन करने पर Y का मूल्य मिलेगा जहाँ वस्तु एवं मुद्रा बाजार संतुलन में होंगे।

हम समीकरणों को पुनर्व्यवस्थित करते हैं-

$$Y = \alpha_G \left[\bar{A} - \frac{b}{h} \left(kY - \frac{\bar{M}}{P} \right) \right]$$

$$Y = \alpha_G \left[\bar{A} - \frac{bk}{h} Y + \frac{b}{h} \cdot \frac{\bar{M}}{P} \right]$$

$$Y = \left[\alpha_G \bar{A} - \alpha_G \frac{bk}{h} Y + \alpha_G \cdot \frac{b}{h} \cdot \frac{\bar{M}}{P} \right]$$

$$\left[Y + \alpha_G \frac{bk}{h} Y \right] = \left[\alpha_G \bar{A} + \alpha_G \frac{b}{h} \cdot \frac{\bar{M}}{P} \right]$$

$$Y \left[1 + \alpha_G \frac{bk}{h} \right] = \left[\alpha_G \bar{A} + \alpha_G \frac{b}{h} \cdot \frac{\bar{M}}{P} \right]$$

$$Y = \left[\frac{\alpha_G}{1 + \alpha_G \frac{bk}{h}} \right] \bar{A} + \left[\frac{\alpha_G}{1 + \alpha_G \frac{bk}{h}} \cdot \frac{b}{h} \cdot \frac{\bar{M}}{P} \right]$$

$$Y = \gamma \bar{A} + \gamma \frac{b}{h} \cdot \frac{\bar{M}}{P} \quad \dots(\text{A.3})$$

समग्र मांग एवं
समग्र आपूर्ति

$$\text{जहाँ } \gamma = \left[\frac{\alpha_G}{1 + \alpha_G \frac{bk}{h}} \right]$$

यह कहा जा सकता है कि आय का संतुलन स्तर स्वायत्त व्यय (\bar{A}) एवं वास्तविक मुद्रा स्टॉक $\left(\frac{\bar{M}}{\bar{P}}\right)$ पर निर्भर करता है। संतुलन आय उच्चतर होती है, यदि स्वायत्त व्यय \bar{A} एवं वास्तविक मुद्रा स्टॉक $\frac{\bar{M}}{\bar{P}}$ उच्चतर होते हैं। यदि समीकरण (A.3) में प्राप्त Y के मूल्य को समीकरण (A.2) में प्रतिस्थापित किया जाए तो तो संतुलन ब्याज की दर प्राप्त होती है जैसे कि

$$i = \frac{1}{h} \left(kY - \frac{\bar{M}}{\bar{P}} \right) \quad \dots(A.4)$$

अब $Y = \gamma \bar{A} + \gamma \frac{b}{h} \cdot \frac{\bar{M}}{\bar{P}}$ के मूल्य (जोकि A.3 समीकरण से प्राप्त किया गया है) को समीकरण (A.4) में प्रतिस्थापित करने के बाद प्राप्त होता है

$$i = \frac{1}{h} \left[k \left(\gamma \bar{A} + \gamma \frac{b}{h} \cdot \frac{\bar{M}}{\bar{P}} \right) - \frac{\bar{M}}{\bar{P}} \right] \quad \dots(A.5)$$

समीकरण (A.5) को पुनर्व्यवस्थित पुनर्व्यवस्थित करने पर—

$$i = \frac{k}{h} \gamma \bar{A} + \frac{1}{h} \left(\gamma \cdot \frac{bk}{h} \cdot \frac{\bar{M}}{\bar{P}} - \frac{\bar{M}}{\bar{P}} \right)$$

$$i = \frac{k}{h} \gamma \bar{A} + \frac{1}{h} \left(\frac{\gamma bk}{h} - 1 \right) \frac{\bar{M}}{\bar{P}}$$

$$i = k\gamma \bar{A} + \frac{1}{h} \left(\frac{bkh\alpha_G}{h(bkh\alpha_G)} - 1 \right) \frac{\bar{M}}{\bar{P}}$$

$$\text{जैसा कि } \gamma = \frac{\alpha_G}{1 + \frac{bk\alpha_G}{h}} = \frac{h\alpha_G}{(h + bk\alpha_G)}$$

$$\text{इसलिए, } i = k\gamma \bar{A} + \frac{1}{h} \left(\frac{bk\alpha_G - h - bk\alpha_G}{h + bk\alpha_G} \right) \frac{\bar{M}}{\bar{P}}$$

$$i = \frac{k}{h} \gamma \bar{A} + \frac{1}{h} \left(\frac{-h}{h + bk\alpha_G} \right) \frac{\bar{M}}{\bar{P}}$$

$$i = \frac{k}{h} \gamma \bar{A} - \left(\frac{1}{h + bk\alpha_G} \right) \frac{\bar{M}}{P} \quad \dots(A.6)$$

संतुलन ब्याज की दर α_G पर निर्भर करती है: एवं राजकोषीय नीति के प्राचाल (parameter), स्वायत्त व्यय \bar{A} और वास्तविक मुद्रा स्टॉक $\left(\frac{\bar{M}}{P} \right)$ को गुणक में दर्शाया जा सकता है। यदि वास्तविक मुद्रा स्टॉक बढ़ता है तो संतुलन ब्याज दर घटता है। यदि स्वायत्त व्यय बढ़ता है तो संतुलन ब्याज दर भी बढ़ता है।

A1.2 राजकोषीय नीति एवं मौद्रिक नीति के गुणक

नीति निर्माता, राजकोषीय व्यय में परिवर्तन से आय के संतुलन स्तर में होने वाले परिवर्तन जहाँ वास्तविक मुद्रा पूर्ति स्थिर हो, में रूचि रखते हैं। यह सूचना राजकोषीय नीति गुणक से प्राप्त की जाती है। पिछले भाग में आय का संतुलन स्तर कैसे प्राप्त किया जाता है को निम्न प्रकार से दर्शाया गया है—

$$Y = \gamma \bar{A} + \gamma \frac{b}{h} \cdot \frac{\bar{M}}{P}$$

सरकारी व्यय (ΔG) में वृद्धि, संतुलन आय (Y) में परिवर्तन लाती है।

यहाँ सरकारी व्यय $\frac{\Delta Y}{\Delta G} = \gamma$ अर्थात् स्वायत्त व्यय ($\Delta G = \bar{A}$) ही सरकारी व्यय है, इसलिए—

$$\text{जहाँ } \gamma = \left[\frac{\alpha_G}{1 + \alpha_G \frac{bk}{h}} \right] = \alpha_G \times \frac{1}{1 + \alpha_G \frac{bk}{h}}$$

इस प्रकार, γ 'राजकोषीय नीति गुणक' अथवा 'सरकारी व्यय गुणक' है। यदि α_G की γ से तुलना करें, तो पता चलता है कि $\gamma < \alpha_G$ है, क्योंकि γ एक अंश है $\frac{1}{1 + \alpha_G \frac{bk}{h}}$

यदि IS-LM मॉडल में राजकोषीय विस्तार को देखा जाए तो बढ़ी हुई ब्याज दरों का मन्द प्रभाव (dampening effect) दिखेगा।

h का γ पर प्रभाव को इस प्रकार से समझाया जा सकता है, यदि h का मूल्य कम होता (0 के समीप), तो γ का मूल्य भी 0 के आस पास ही होगा। दूसरी ओर, यदि h का मूल्य अनंत के समीप होता है तो γ का मूल्य भी अनंत पहुँच जाता है।

जब LM वक्र अधोलंब (vertical) के समीप होता है तो h का मूल्य बहुत कम हो जाता है, जहाँ राजकोषीय नीति गुणक (γ) का मूल्य भी लगभग 0 हो जाता है। सामान्य रूप से, जब LM वक्र क्षैतिज (horizontal) के समीप होता है, तब h का मूल्य अधिक होता है, जहाँ राजकोषीय नीति गुणक का मूल्य अनंत हो जाता है। (कृपया ध्यान दीजिए कि LM

समग्र मांग एवं
समग्र आपूर्ति

वक्र k/h है)। सामान्य रूप से, b और k का अधिक मूल्य, राजकोषीय नीति गुणक के मूल्य को कम करता है।

इस सूचना से मौद्रिक नीति गुणक का पता चलता है। जैसा कि हम जानते हैं—

$$Y = \gamma \bar{A} + \gamma \frac{b \bar{M}}{h \bar{P}}$$

‘मौद्रिक नीति गुणक’ की अभिव्यक्ति आसानी से की जा सकती है।

$$\frac{\frac{\Delta Y}{\bar{M}}}{\frac{\Delta \bar{M}}{\bar{P}}} = \frac{b}{h} \gamma \quad \dots(A.7)$$

अधिक b और कम h का मूल्य, विस्तारवादी मौद्रिक नीति के संतुलन आय में वृद्धि के प्रभाव को सूचित करता है। अधिक b के मूल्य का अर्थ है IS वक्र का चपटा (flatter) होना। इसलिए यदि IS वक्र चपटा नहीं है तो ‘विस्तारवादी मौद्रिक नीति’ कम प्रभावकारी होगी।

इकाई 2 समग्र आपूर्ति*

इकाई की रूपरेखा

- 2.0 उद्देश्य
- 2.1 विषय प्रवेश
- 2.2 समग्र आपूर्ति वक्र और श्रम बाजार
 - 2.2.1 पूर्णतः लोचदार वेतन और परम्परागत AS वक्र
 - 2.2.2 पूर्णतः लोचहीन वेतन और केन्जिय AS वक्र
- 2.3 अपूर्ण प्रतिस्पर्धा के अनुसार श्रम बाजार
 - 2.3.1 वेतन निर्धारण
 - 2.3.2 मूल्य निर्धारण
 - 2.3.3 श्रम बाजार में संतुलन
- 2.4 समग्र आपूर्ति वक्र का आलकन
- 2.5 AS वक्र का खिसकाव
 - 2.5.1 प्रत्याशित मूल्य में परिवर्तन
 - 2.5.2 मूल्य वृद्धि और μ बहुबोधक चर z में परिवर्तन
- 2.6 अल्पावधि और दीर्घावधि समग्र आपूर्ति
- 2.7 मध्यावधि में AS वक्र
- 2.8 सार—संक्षेप
- 2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

2.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप इस स्थिति में होंगे कि:

- समष्टि अर्थशास्त्र में समग्र आपूर्ति (AS) की संकल्पना स्पष्ट कर सकें;
- श्रम बाजार और AS वक्र के बीच संबंध पहचान सकें;
- AS वक्र की आकृति स्पष्ट कर सकें;
- वे कारक पहचान सकें जो AS वक्र में किसी खिसकाव की ओर अग्रसर करते हैं; तथा
- स्पष्ट कर सकें कि अल्पावधि और मध्यावधि में समग्र आपूर्ति (AS) किस प्रकार बदलती है।

2.1 विषय प्रवेश

पिछली इकाई में हमने देखा कि अर्थव्यवस्था में साम्य उत्पादन और मूल्य स्तर समग्र माँग (AD) और समग्र आपूर्ति (AS) दोनों की ही मदद से ज्ञात किए जाते हैं। माँग आघात

* सुश्री अर्चना अग्रवाल, सहायक प्राध्यापक, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

(स्वायत्त अथवा नीति-प्रेरित) की स्थिति में, उत्पादन एवं मूल्यों में आपेक्षिक परिवर्तन निर्धारित किए जाते समय AS वक्र की आकृति एक निर्णायक भूमिका निभाती है। इस इकाई में हम AS वक्र की संकल्पना और व्युत्पत्ति पर ही चर्चा करेंगे। हम यह भी देखेंगे कि श्रमिक बाजार में परिस्थितियाँ AS वक्र की आकृति कैसे निर्धारित करती हैं।

इसके अलावा, हम मूल्य विषयक प्रत्याशाओं की संकल्पना और AS वक्र की स्थिति पर प्रत्याशाओं द्वारा निर्भाई जाने वाली भूमिका पर भी नज़र डालेंगे। अंततः हम आनुभविक रूप से प्रेक्षित फिलिप्स वक्र और AS वक्र के बीच संबंध पर भी विचार करेंगे।

2.2 समग्र आपूर्ति वक्र और श्रम बाज़ार

समग्र आपूर्ति अर्थात् AS वक्र प्रस्तुत उत्पादन और उन संगत कीमतों के बीच संबंध दर्शाता है जिन पर फर्मा द्वारा उस उत्पादन की आपूर्ति की गई। समग्र आपूर्ति अर्थात् AS संबंध को निम्नलिखित प्रश्न पूछकर समझा जाना श्रेयस्कर रहता है: किसी उत्पादन स्तर विशेष के प्रस्तुतीकरण के अनुरूप मूल्य स्तर क्या होगा? यह क्रमशः उस उत्पादन स्तर के प्रस्तुतीकरण के अनुरूप उत्पादन लागत पर निर्भर करता है। यदि उत्पादन लागत ऊँची होगी तो उत्पाद की कीमत भी ऊँची होगी। इसके अलावा, यदि प्रस्तुत उत्पादन में किसी वृद्धि के साथ उत्पादन लागत भी बढ़ती है तो सामान्यतया वसूली जाने वाली कीमतें भी बढ़ती हैं।

जैसा कि व्यष्टि अर्थशास्त्र से हमें ज्ञात है, उत्पादन प्रक्रिया में पूँजी, श्रम एवं कच्चा माल जैसे अनेक निवेश अपेक्षित होते हैं। उत्पादन लागत का एक प्रमुख अंग है — मजदूरी की लागत। वस्तुतः जब हम अपने उत्पादन फलन का विश्लेषण प्रारंभ करते हैं तो, उदाहरणों के सरलीकरण हेतु, हम यह मानकर चलते हैं कि पूँजी निवेश नियत होता है और श्रम ही एकमात्र परिवर्तनशील चर होता है। अतः विभिन्न उत्पादन स्तरों के अनुरूप कीमतों के बारे में बात करने से पहले हमें यह समझना होगा कि वेतन या मजदूरी कैसे तय की जाती है। यह दर्शाया जा सकता है कि श्रम बाजार में मंडी या बाजार की संरचना ज्ञात होने पर वेतन अर्थव्यवस्था में रोजगार के (और बेरोजगारी के भी) स्तर पर निर्भर करता है। साथ ही, किसी उत्पादन स्तर विशेष का प्रस्तुतीकरण रोजगार के किसी ज्ञात स्तर (प्रौद्योगिकी और उत्पादन तकनीकों का ज्ञान होने पर) के अनुरूप होता है। तदनुसार, सर्वप्रथम हम श्रम बाजार में बेरोजगारी (रोजगार) और वेतन के बीच संबंध स्थापित करेंगे और फिर प्रस्तुत उत्पादन एवं मूल्य स्तर के बीच संबंध (यथा, AS वक्र) दर्शाने की ओर अग्रसर होंगे।

2.2.1 पूर्णतः लोचदार वेतन और परंपरागत AS वक्र

किसी भी पूर्णतः प्रतिस्पर्धात्मक श्रम बाजार में (परंपरागत अर्थशास्त्रियों द्वारा की गई अवकल्पना) श्रमिकों की माँग और उनकी आपूर्ति वास्तविक वेतन दरों का फलन होता है (BECC-103 की इकाई 9: प्रारंभिक समष्टि अर्थशास्त्र का संदर्भ लें)। तदनुसार, हमें प्राप्त होता है —

$$D_L = N(W/p) \quad \dots (2.1)$$

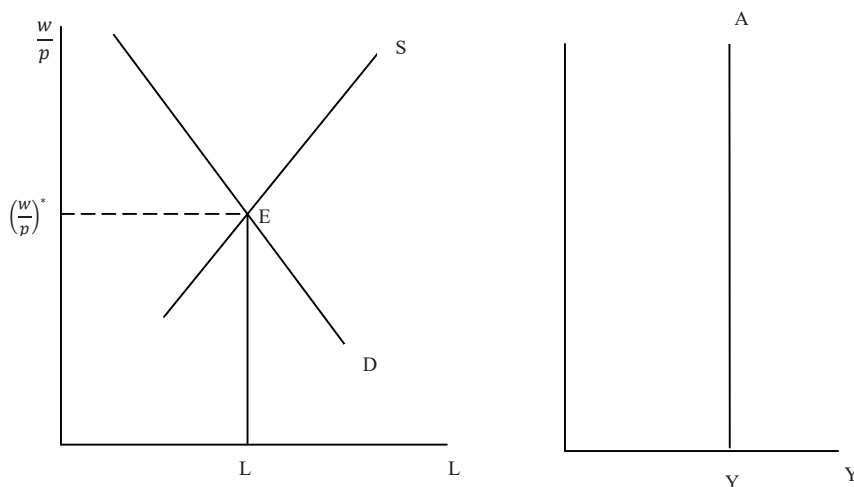
$$S_L = F(W/p) \quad \dots (2.2)$$

श्रम माँग वक्र वास्तविक वेतन दरों और श्रमिकों की माँग के बीच एक नकारात्मक संबंध दर्शाता है। जैसा कि आप जानते ही हैं, पूर्ण प्रतिस्पर्धा में फर्मे मूल्य-ग्रहीता होती हैं। श्रम बाजार और उत्पाद बाजार दोनों में ही पूर्ण प्रतिस्पर्धा फर्मा को वास्तविक वेतन श्रम के सीमांत उत्पाद (MP_L) के बराबर माने जाने की ओर अग्रसर करती है क्योंकि वे श्रम के

सीमांत उत्पाद के मान (VMP_L) को किसी ज्ञात मात्रिक वेतन (w) के बराबर मानते हैं। चूँकि उत्पादन फलन को ह्रासमान लाभ से अभिलक्षित माना जाता है, रोजगार बढ़ने पर उक्त उत्पाद MP_L घट जाता है। इस प्रकार, जब फर्मे वास्तविक वेतन ज्ञात मानकर चलती हैं और श्रमिक उस बिंदु तक नियोजित कर लेती हैं जहाँ सीमांत उत्पाद वास्तविक वेतन के बराबर हो जाता है (अथवा सीमांत उत्पाद मात्रिक वेतन के बराबर हो जाता है) तो श्रम माँग वक्र अधोमुखी प्रवण होता है।

दूसरी ओर, श्रम आपूर्ति वक्र ऊर्ध्वमुखी प्रवण होता है। यह श्रम आपूर्ति करने वाले उन परिवारों के अनुकूलक व्यवहार से अवकलित किया जाता है जो किसी काम करने/कोई वेतन अर्जित करने और आमोद-प्रमोद के बीच अपना समय आवंटित करते हैं। ये परिवार दिया जाने वाला वेतन लेते हैं और आपूर्ति किए जाने वाले श्रम की मात्रा तय करते हैं ताकि वे अपनी उपयोगिता अधिकतम कर सकें।

श्रम बाजार वास्तविक वेतन दरों और रोजगार के उस स्तर पर संतुलन की स्थिति में रहता है जहाँ श्रम की माँग श्रम की आपूर्ति के बराबर होती है। लोचदार वेतन की संकल्पना यह सुनिश्चित करती है कि संतुलन से कोई भी अस्थायी विचलन मात्रिक वेतनों में किसी तत्काल परिवर्तन से तुरंत दुरुस्त कर लिया जाए। दूसरे शब्दों में, वेतन दरों की पूर्ण लोचता रोजगार का वह स्तर दर्शाती है जहाँ हर वह व्यक्ति जो अभिभावी वेतन दरों पर काम करना चाहता है, काम पाता है या फिर वहाँ केवल ऐसी बेकारी ही अस्तित्व रखती है जो स्वैच्छिक बेरोजगारी कहलाती है (अर्थात् अनैच्छिक बेरोजगारी का अस्तित्व नहीं होता)। किसी भी अर्थव्यवस्था में उत्पादन स्तर उत्पादन फलन से अवकलित किया जा सकता है, बशर्ते श्रम बाजार में रोजगार का संतुलन स्तर अर्थात् $y = f(L)$, जहाँ L रोजगार स्तर है। आप दर्शा सकते हैं कि रोजगार स्तर, और इसीलिए उत्पादन स्तर विभिन्न मूल्य स्तरों पर एक समान ही रहते हैं। उपर्युक्त का एक निहितार्थ यह है कि उत्पादन स्तर में कोई बदलाव नहीं है और हमें एक शीर्ष AS वक्र प्राप्त होता है। इसका अर्थ है कि यह AS वक्रपूर्णतः लोचहीन है। मूल्य स्तर में कोई भी ऐसा परिवर्तन जो वास्तविक वेतनों को प्रभावित कर श्रम बाजार में संतुलन बिगाड़ता हो तो उसे मात्रिक वेतनों में कोई आनुपातिक परिवर्तन कर तत्काल ठीक कर लिया जाता है (देखें इकाई 9, BECC-103)। इस स्थिति में साम्य उत्पादन अपरिवर्तित रहता है। वेतन की पूर्ण लोचता संबंधी अवधारणा पर आधारित इस प्रकार के AS वक्र को प्रायः परंपरागत समग्र आपूर्ति वक्र कहा जाता है (देखें चित्र 2.1)।

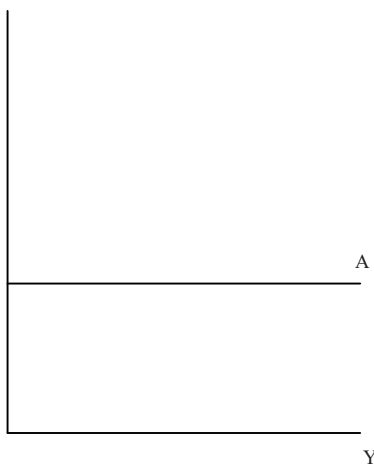


चित्र 2.1: श्रम बाजार संतुलन और परंपरागत AS वक्र

2.2.2 पूर्णतः लोचहीन वेतन और केन्जिय AS वक्र

यहाँ हम एक उदाहरण लेते हैं जो कि आलेखीय रूप से परंपरागत अवधारणा के विरुद्ध है और यहाँ वेतन पूरी तरह लोचहीन माने जाते हैं। लोचहीन मात्रिक वेतन संबंधी अवधारणा का निहितार्थ यह है कि हम प्रतिस्पर्धात्मक बाजारों की अवधारणा से परे जाकर बाजारों को अपूर्ण मान लेते हैं। वेतन दर में लोचहीनता दो कारणों से देखी जा सकती है: (i) कई बार, जैसा कि हम अपने अनुभव से जानते हैं, वेतन श्रमिक और फर्मों के बीच किसी अनुबंध से तय किए जाते हैं। ऐसे मामलों में वेतन दर आपूर्ति और माँग दशाएँ परिवर्तित हो जाने पर भी नहीं बदलतीं। (ii) उत्पाद बाजार प्रतिस्पर्धात्मक नहीं होता और उत्पादक फर्म मूल्य-ग्रहीता नहीं होती। इन फर्मों के पास अपनी उत्पादन कीमतें तय करने के लिए कुछ एकाधिकार शक्ति होती है। वे कोई ऐसी कीमत वसूलती हैं जो वेतन दरों से ऊपर कुछ 'बढ़ाव' लिए होती हैं।

अपूर्ण रूप से प्रतिस्पर्धात्मक श्रम एवं उत्पाद बाजार ज्ञात होने पर हमें यह समझना पड़ता है कि वेतन कैसे निर्धारित होंगे, और वेतन ज्ञात होने पर फर्मों द्वारा वसूली जाने वाली कीमतें क्या होंगी। ऐसी दशाओं में एक सटीक उदाहरण कोई पूर्णतः लोचहीन मात्रिक वेतन वाला हो सकता है। यहाँ वेतन रोजगार स्तर पर ध्यान दिए बगैर एक समान ही रहते हैं। मान लीजिए कि ये फर्म वेतन से ऊपर कोई कीमत $x\%$ वसूलती हैं। इसका अर्थ होगा कि कीमतें रोजगार के सभी स्तरों पर एक समान रहेंगी और चूँकि रोजगार का प्रत्येक स्तर उत्पादन के किसी अद्वितीय स्तर के अनुरूप होता है, हमें एक AS वक्र प्राप्त होता है जो कि असीम रूप से लोचदार (क्षैतिज रेखा) होता है। ऐसे उदाहरणों में फर्मों उत्पादन के सभी स्तरों पर एक समान कीमत ही वसूलती हैं। इसे प्रायः केन्जिय समग्र आपूर्ति वक्र की संज्ञा दी जाती है (देखें चित्र 2.2)।



चित्र 2.2: वेतन लोचहीनता और AS वक्र अपूर्ण प्रतिस्पर्धा के अनुसार श्रम बाजार

2.3 अपूर्ण प्रतिस्पर्धा के अनुसार श्रम बाजार

पिछले पाठांश में चर्चा का विषय रहा पूर्णतः लोचहीन वेतन पूर्णतः प्रतिस्पर्धात्मक श्रम बाजारों की अपेक्षा कम का एक विशेष उदाहरण है। अब हम एक कहीं अधिक व्यापक उदाहरण पर चर्चा करेंगे जहाँ श्रम बाजार और उत्पाद बाजार दोनों ही पूर्णतः प्रतिस्पर्धात्मक नहीं होते। इसका अर्थ है कि न तो श्रमिक मूल्य-ग्रहीता होते हैं और न ही फर्म। वस्तुतः वेतन या तो नियोक्ताओं द्वारा तय किए जाते हैं या फिर किसी मजदूर संघ

द्वारा अथवा इन दोनों के बीच सामूहिक मोलभाव प्रक्रिया के माध्यम से। एक बार वेतन तय हो जाने के बाद फर्म वेतनों से ऊपर कोई कीमत तय कर देती है।

2.3.1 वेतन निर्धारण

समग्र मात्रिक वेतन W तीन कारकों पर निर्भर करता है: (i) नकारात्मक रूप से, बेरोजगारी दर, u पर (इसका अर्थ है कि समाज में बेरोजगारी की उच्चतर दर मात्रिक वेतन दर पर नकारात्मक प्रभाव डालेगी); (ii) सकारात्मक रूप से, प्रत्याशित मूल्य स्तर, P^e (यदि श्रमिकों को उम्मीद है कि उत्पादन मूल्य बढ़ने वाला है तो वे उच्चतर मात्रिक वेतन की माँग करेंगे), तथा (iii) सकारात्मक रूप से, किसी बहुबोधक चर, z , पर जो कि ऐसे अन्य सभी चरों का प्रतिनिधित्व करता है जो वेतन निर्धारण को प्रभावित कर सकते हैं। इसे निम्नवत् दर्शाया जा सकता है—

$$W = P^e F(u, z) \quad (2.3)$$

आइए, अब इन कारकों पर एक-एक कर विस्तृत चर्चा करें।

2.3.1.1 वेतन और बेरोजगारी

वेतन निर्धारण संबंधी व्याख्याएँ मुख्यतः दो प्रकार से की जाती हैं—

a) श्रमिकों द्वारा मोलभाव

श्रमिकों की सौदाकारी शक्ति श्रम बाजार में अभिभावी आर्थिक परिवेश पर निर्भर करता है। बेरोजगारी की निम्न दरों पर श्रमिक और मजदूर संघ मोलतोल करने की कहीं बेहतर स्थिति में होते हैं। ऐसी परिस्थितियों में श्रमिक कहीं ऊँचे वेतन पा सकते हैं। बहरहाल, बेरोजगारी की दर ऊँची होने के दौरान यह सौदाकारी शक्ति क्षीण पड़ जाती है और इस कारण श्रमिकों को कम वेतन पर ही मान जाना पड़ता है। दूसरे शब्दों में, इस व्याख्या के अनुसार, वेतन दरें बेरोजगारी की दर पर विलोमतः निर्भर करती हैं।

b) फर्मों द्वारा तय दक्षता वेतन

यह व्याख्या इस प्रश्न को केंद्र में रखती है कि कर्मचारियों को प्रस्तावित वेतन दर कोई फर्म कैसे तय करती है। जब समाज में बेकारी फैलती है तो फर्मों के लिए पुराने कर्मचारी बने रहने देना अथवा नये कर्मचारी भर्ती करना मुश्किल हो जाता है। फर्म नहीं चाहती कि कार्यरत कर्मचारी उन्हें छोड़ जाएँ; क्योंकि नये कर्मचारियों की भर्ती उत्पादन लागत बढ़ा देती है। इसके अलावा, नये कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना पड़ता है जिसमें एक बार फिर लागत आती है। अतएव, कर्मचारियों को आकर्षित करने के लिए फर्म 'उच्च वेतन' तय करती हैं। दक्षता वेतन सिद्धांत कर्मचारियों की 'उत्पादकता' अथवा 'दक्षता' को कर्मचारियों को चुकाए जाने वाले वेतन से जोड़कर देखते हैं।

उपर्युक्त दोनों ही व्याख्याएँ मात्रिक वेतन को बेरोजगारी दर से विलोमतः संबद्ध करती हैं।

2.3.1.2 वेतन और प्रत्याशित मूल्य स्तर (P^e)

कर्मचारी वर्ग दरअसल मात्रिक वेतन में कोई रुचि नहीं रखता बल्कि उसकी रुचि होती है वेतन दरों की क्रय शक्ति अथवा वस्तुओं की उस मात्रा में जो उन मात्रिक वेतन राशियों से खरीदी जा सकती है। दूसरे शब्दों में, कर्मचारियों की रुचि वास्तविक वेतन दरों में होती है, यथा, W/P वेतनमान तय करने के लिए कोई अनुबंध करते समय, बहरहाल, उन वास्तविक कीमतों को जानना संभव नहीं होता जो उस अवधि में अभिभावी होंगी जिसके लिए वह अनुबंध किया गया है।

भावी कीमतों का वर्तमान में बोध नहीं किया जा सकता; उनकी केवल प्रत्याशा ही की जा सकती है। यदि प्रत्याशित कीमतें ऊँची होंगी तो कर्मचारी ऊँची ही मात्रिक वेतन दरों की माँग करेंगे। तदनुसार, मात्रिक वेतन, w , प्रत्याशित मूल्य P^e से सीधा संबंध रखता है।

2.3.1.3 वेतन और बहुअर्थीय चर, z

बेरोजगारी दर और प्रत्याशित मूल्य स्तर के अलावा कुछ अन्य चर भी होते हैं जो वेतन दर को प्रभावित करते हैं। ऐसे अन्य सभी चरों पर विचार करने के लिए हम रोमन लिपि का अक्षर z प्रयोग करते हैं जो कर्मचारियों की सौदाकारी स्थिति और, इस कारण, उनके मात्रिक वेतन को प्रभावित करते हैं। एक दृष्टांत स्वरूप, चलिए, न्यूनतम वेतन कानून पास किए जाने पर विचार करते हैं। इस कानून से कर्मचारियों की सौदाकारी शक्ति में इजाफा होता है क्योंकि इससे उन्हें मालूम हो जाता है कि वे निर्धारित की गई वेतन राशि पाने के कानूनन हकदार हैं। इससे कर्मचारी वर्ग प्रत्येक बेरोजगारी दर पर उच्चतर मात्रिक वेतन दरों की माँग करने को प्रेरित होता है और इसे z में वृद्धि के रूप में इंगित किया जाता है। इसके विपरीत, चलिए, एक ऐसी स्थिति पर विचार करते हैं जहाँ मजदूर संघ किसी न किसी वजह से अप्रभावी हो जाते हैं। ऐसे उदाहरणों में कर्मचारियों की सौदाकारी शक्ति घट जाती है और वे हर बेरोजगारी दर पर निम्नतर मात्रिक वेतन पर ही राजी हो जाते हैं। इसे चर z में घास के रूप में दर्शाया जाता है।

इस प्रकार, मात्रिक वेतन, W , बहुबोधक चर z से सीधे (अथवा, सकारात्मक रूप से) जुड़ा होता है।

2.3.2 मूल्य निर्धारण

पिछले पाठांश में हमने वेतन दर निर्धारण पर चर्चा की। अब, आइए, इस बात पर चर्चा करते हैं कि फर्म कीमतें कैसे तय करती हैं। किसी फर्म द्वारा तय किसी उत्पाद की कीमत उसकी उत्पादन लागत पर निर्भर करती है। लागत राशियाँ, दूसरी ओर, निवेश राशियों और उसके उत्पादन फलन द्वारा दर्शाई गई उत्पादन प्रौद्योगिकी की कीमत पर निर्भर करती है। एक सुगमकारी अवधारणा स्वरूप, चलिए, मान लेते हैं कि श्रम की एक इकाई उत्पादन की एक इकाई प्रस्तुत करती है अर्थात् श्रम उत्पादकता 1 के बराबर है। अब उत्पादन की एक अधिक इकाई प्रस्तुत करने की लागत अर्थात् सीमांत लागत एक अधिक श्रमिक नियोजित करने की लागत के बराबर होगी जो कि कुछ और नहीं वेतन दर ही है। यदि उत्पाद बाजार पूर्णतः प्रतिस्पर्धात्मक रहा होता तो फर्मों द्वारा वसूली गई कीमतें वेतन दर के बराबर होतीं। बहरहाल, जिस बाजार पूर्णतः प्रतिस्पर्धात्मक नहीं है जिसका अर्थ है कि फर्म (श्रम बाजार में कर्मचारियों की भाँति) मूल्य-ग्रहीता नहीं बल्कि मूल्य-निर्धारक हैं। सामान्यतः ऐसी परिस्थितियों में वसूली गई कीमतें वेतन राशियों से कहीं अधिक होती हैं या फिर कीमत वेतन लागत से कुछ बढ़ाव लिए होती है। यदि यह बढ़ाव μ से इंगित किया जाए तो फर्म द्वारा तय कीमत को निम्नवत् दर्शाया जा सकता है—

$$P = (1 + \mu)W \quad \dots (2.4)$$

2.3.3 श्रम बाजार में संतुलन

ऐसे मामलों में जहाँ श्रम और जिस बाजार पूर्णतः प्रतिस्पर्धात्मक नहीं होते, श्रम बाजार की संतुलन वहाँ नजर आती है जहाँ कर्मचारियों की इच्छाओं का और फर्मों की इच्छाओं का संगम होता है।

इसके लिए हम वेतन निर्धारण (WS) और मूल्य निर्धारण (PS) नामक दो वक्र खींचते हैं। इनमें से WS वक्र पूर्वोक्त समीकरण (2.3) से अवकलित किया गया है।

चलिए, मान लेते हैं कि प्रत्याशित मूल्य वास्तविक मूल्य के बराबर ही है (ऐसा मध्यावधि अथवा दीर्घावधि में होता है जो कि इकाई 3 में स्पष्ट किया जाएगा)। अब उक्त WS संबंध को निम्नवत् लिखा जा सकता है —

समीकरण (2.3) से हमें ज्ञात है कि

$$W = P^e F(u, z)$$

$$(-, +)$$

माना $P = P^e$

तब, $W = P \cdot F(u, z)$

अथवा, $\frac{W}{P} = F(u, z)$... (2.5)

समीकरण (2.5) जा वास्तविक वेतन दर और बेरोजगारी दर के बीच संबंध दर्शाता है, ही वेतन निर्धारण समीकरण कहलाता है।

दूसरी ओर, PS समीकरण पूर्वोक्त समीकरण (2.4) से अवकलित किया जाता है। यह PS समीकरण ऊपर वास्तविक उस वेतन के रूप में लिखे समीकरण (2.4) के समान ही है जो फर्मे देने को इच्छुक हैं।

समीकरण (2.4) से ज्ञात होता है कि $P = (1 + \mu)W$

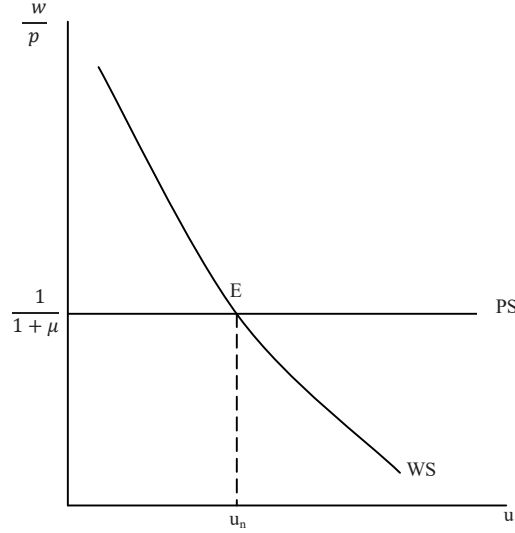
$$\text{अथवा, } \frac{P}{W} = (1 + \mu)$$

$$\text{अथवा, } \frac{W}{P} = \frac{1}{1 + \mu} \quad \dots (2.6)$$

उक्त WS और PS समीकरणों को हम आरेख के माध्यम से भी दर्शा सकते हैं (देखें चित्र 2.3)।

यहाँ x अक्ष पर बेरोजगारी दर और y अक्ष पर वास्तविक वेतन मापा जाता है। यही WS वक्र एक अधोमुखी प्रवण वक्र के रूप में जबकि PS वक्र x अक्ष के समानांतर एक क्षैतिज रेखा के रूप में नजर आता है। इसके लिए उत्तरदायी कारण स्पष्ट हैं। चूँकि मात्रिक वेतन, W , बेरोजगारी u , का एक प्रतिलोम फलन दर्शाता है, वास्तविक वेतन, $\frac{W}{P}$, बेरोजगारी से विलोम भिन्नता ही दर्शाएगा। किसी भी ज्ञात वेतन (w) के लिए हमें अनेक वास्तविक वेतन ($w = W/P$) वक्र प्राप्त होते हैं, बशर्ते P का मान दिया गया हो। यदि हम समीकरण (2.5) पर नजर डालें तो पाएँगे कि प्रत्याशित मूल्य और बहुबोधक चर z के मान पर निर्भर करते हुए WS वक्रों की संख्या एकाधिक हो सकती है।

चलिए, किसी प्रत्याशित मूल्य P^e और बहुबोधक चर z के आधार पर एक विशिष्ट WS वक्र पर विचार करते हैं। यहाँ P^e और z में कोई भी वृद्धि WS को दाएँ खिसका देगी। इसी प्रकार, P^e और z में कोई भी WS को बाएँ खिसका देगा। यहीं PS वक्र क्षैतिज नजर आता है। इसी कारण PS वक्र द्वारा इंगित वास्तविक वेतन, $\frac{1}{1 + \mu}$, बेरोजगारी u के स्तर पर निर्भर नहीं है।



चित्र 2.3: श्रम बाजार संतुलन

याद रखें कि जहाँ WS और PS वक्र परस्पर प्रतिच्छेद करते हैं, श्रम बाजार संतुलन में होता है। यहाँ ध्यान से देखने पर आप पाएँगे कि WS वक्र गैर-प्रतिस्पर्धात्मक बाजारों में श्रम के आपूर्ति वक्र के समान ही होता है। यह बात आपको आश्चर्यचकित कर सकती है कि चित्र 2.3 में WS वक्र अधोमुखी प्रवण है जबकि आपूर्ति वक्र ऊर्ध्वमुखी प्रवण। ध्यान दें कि बेरोजगारी का स्तर हम चित्र 2.3 में x अक्ष पर मापते हैं – जब बेरोजगारी बढ़ती है तो रोजगार का स्तर घटता है। दूसरी ओर, जब रोजगार का स्तर घटता है तो उत्पादन का स्तर भी घटता है। तदनुसार हमें एक अधोमुखी प्रवण WS वक्र प्राप्त होता है। यदि हमने रोजगार स्तर (बेरोजगारी के विपरीत) x अक्ष पर मापा होता तो हमें एक ऊर्ध्वमुखी प्रवण WS वक्र प्राप्त होता, जोकि श्रम के आपूर्ति वक्र के समान ही होता है। इसके अलावा, PS वक्र गैर-प्रतिस्पर्धात्मक दशाओं में श्रम के माँग वक्र के समान ही होता है। संतुलन वास्तविक वेतन PS वक्र द्वारा इंगित $\frac{1}{1+\mu}$ के बराबर होता है। ध्यान देने की बात है कि चित्र 2.3 में WS और PS वक्रों का प्रतिच्छेदन हमें श्रम बाजार में बेरोजगारी का संतुलन स्तर बतलाता है। बेरोजगारी की यह साम्य दर, u_n बेरोजगारी की स्वाभाविक दर भी कही जाती है। बेरोजगारी की यह स्वाभाविक दर ही न्यूनतम बेरोजगारी दर होती है जो किसी अर्थव्यवस्था में विभिन्न कारकों की वजह से सामने आती है। ये कारक श्रम बल और चालू आर्थिक परिवेश का प्राधार साबित हो सकते हैं। किसी भी समय-बिंदु पर कुछ ऐसे कर्मचारियों से पाला पड़ सकता है जो एक फर्म छोड़कर दूसरी में जाने की तैयारी में हों। कुछ कर्मचारी ऐसे भी होंगे जो नयी प्रौद्योगिकी आ जाने की वजह से हटा दिए गए हों और वे नयी नौकरी की तलाश में हों। ये कर्मचारी अस्थायी रूप से बेरोजगार होते हैं, जो कि बेरोजगारी की स्वाभाविक दर से उजागर हो जाता है।

बोध प्रश्न 1

- 1) स्पष्ट करें कि निम्नलिखित उदाहरणों में साम्य वास्तविक दर और बेरोजगारी किस प्रकार प्रभावित होते हैं –
 - i) सरकार द्वारा बेरोजगारी लाभ दिए जा रहे हों।
 - ii) लोग अधिकाधिक संख्या में स्वरोजगार में लग रहे हों अथवा अनौपचारिक क्षेत्र की नौकरियों में जा रहे हों।
 - iii) एकाधिकार-विरोधी कानून

- 2) ऐसे कारकों पर प्रकाश डालें जो किसी फर्म द्वारा वेतन निर्धारण को प्रभावित करते हों।

.....

.....

.....

.....

- 3) किसी अपूर्ण रूप से प्रतिस्पर्धात्मक बाजार में फर्म कीमतें कैसे तय करती हैं?

.....

.....

.....

.....

- 4) स्पष्ट करें कि परंपरागत आपूर्ति वक्र लंबवत् क्यों होता है।

.....

.....

.....

.....

2.4 समग्र आपूर्ति वक्र का अवकलन

समग्र आपूर्ति संबंध का अवकलन WS और PS संबंधों का प्रयोग कर बड़ी सरलता से किया जा सकता है। समीकरण (2.4) से हमने जाना कि $P = (1 + \mu)W$ साथ ही, समीकरण(2.3) से हमने जाना कि $W = P^e F(u, z)$ । अतएव, हमएक नया समीकरण निम्नलिखित रूप में लिख सकते हैं—

$$P = (1 + \mu)W = (1 + \mu)P^e F(u, z) \quad \dots (2.7)$$

इस समीकरण (2.7) में आप देखेंगे कि P^e , μ और z , मान दिए गए हैं। तदनुसार, मूल्य स्तर P अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी दर, μ , से विलोमतः संबद्ध है। ऐसा इसलिए है कि मात्रिक वेतन W चर μ का एक प्रतिलोम फलन है। यदि P चर μ से विलोमतः संबद्ध है तो यह उत्पादन स्तर, Y , से सीधे संबद्ध होना चाहिए। इसे बेरोजगारी दर और उत्पादन फलन की परिभाषा पढ़कर समझा जा सकता है।

बेरोजगारी दर, $u = \frac{L-N}{L}$ जहाँ L श्रमबल है और N समग्र रोजगार।

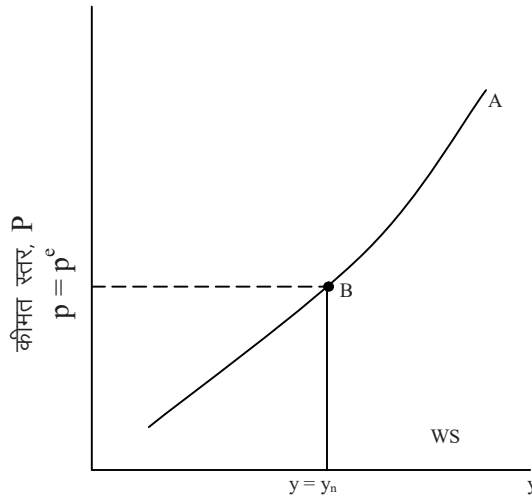
साथ ही, उत्पादन फलन को $Y = AN$, के रूप में लिखा जा सकता है, जहाँ A श्रम उत्पादकता इंगित करता है और N रोजगार है।

याद करें कि हम $A = 1$ मानकर चले थे (देखें पाठांश 2.3.2)। अभी हम इसी अवधारणा को लेकर चलेंगे। तदनुसार, उत्पादन फलन $Y = N$ के रूप में लिखा जा सकता है।

उपर्युक्त परिणामों, $u = \frac{L-N}{L} = \left(1 - \frac{N}{L}\right)$ और $Y = N$, को लेकर हम एक नया संबंध निम्नवत् लिख सकते हैं —

$$P = P^e (1 + \mu) F\left(1 - \frac{Y}{L}, z\right) \quad \dots (2.8)$$

समीकरण (2.8) ही AS वक्र का समीकरण है। चूँकि कीमत u से विलोमतः संबद्ध है, यह उत्पादन स्तर Y से सीधे जुड़ी है। इस AS समीकरण में प्राचल प्रत्याशित मूल्य P^e , के ज्ञात स्तरों, बढ़ाव μ और बहुबोधक चर z पर आधारित हैं। इनमें से प्रत्येक प्राचल से कीमत सीधा संबंध रखती है और इन प्राचलों में कोई भी वृद्धि AS वक्र को ऊपर की ओर खिसका देती है। इस AS वक्र में कोई भी खिसकाव उत्पादन के प्रत्येक स्तर, Y , के अनुरूप एक उच्चतर मूल्य P को इंगित करेगा।



चित्र 2.4: समग्र आपूर्ति वक्र

आपूर्ति वक्र की परिभाषा का स्मरण करें— यह आपूर्तित मात्रा और मूल्य स्तर के बीच संबंध बतलाती है। चित्र 2.4 में वक्र AS एक ऐसा समग्र आपूर्ति वक्र है जो ऊर्ध्वमुखी प्रवण है। यह दर्शाता है कि जब मूल्य स्तर P बढ़ता है तो उत्पादन स्तर Y भी बढ़ता है। चित्र यह भी दर्शाता है कि AS वक्र बिंदु B से होकर गुजरता है, जहाँ उत्पादन स्तर Y उत्पादन के स्वाभाविक स्तर (जिसे अर्थव्यवस्था का संभावित उत्पादन भी कहा जाता है) के बराबर होता है और मूल्य स्तर P प्रत्याशित मूल्य स्तर P^e के बराबर होता है। चलिए, इसके लिए उत्तरदायी कारणों को स्पष्ट करते हैं।

उत्पादन में किसी भी वृद्धि का अर्थ होता है— रोजगार में वृद्धि, N , और बेरोजगारी, u , में घटाव। हमें ज्ञात है कि जब u में गिरावट आती है तो प्रतिस्पर्धात्मक श्रम बाजार में अभिभावी दर की अपेक्षा कम वेतन निर्धारण के कारण मात्रिक वेतन, W , में बढ़ोतरी होती है। हमें यह भी ज्ञात है कि उच्चतर वेतन फर्मों को उच्चतर ही मूल्य निर्धारित करने की ओर प्रवृत्त करता है क्योंकि कोई भी कीमत लागत राशियों का ही बढ़ाव दर्शाती है। इसका अर्थ हुआ कि जब उत्पादन बढ़ता है तो कीमतें भी बढ़ती हैं, और हमें एक ऊर्ध्वमुखी प्रवण AS वक्र प्राप्त होता है।

श्रम बाजार में संतुलन से हमें ज्ञात है कि जब कीमत प्रत्याशित मूल्य के बराबर होता है, यथा, $P = P^e$, तो बेरोजगारी की संतुलन दर बेरोजगारी की स्वाभाविक दर पर ही होती है अर्थात्

$u = u_n$ उत्पादन फलन के अनुसार, u_n (जिसे बेरोजगारी तक माना जाता है) और उत्पादन स्तर के बीच एक अद्वितीयता अनुरूपता होती है। अतः बेरोजगारी u_n की स्वाभाविक वृद्धि दर स्वाभाविक उत्पादन Y_n के अनुरूप ही होता है। यह उत्पादन का ऐसा स्तर होता है जो कीमत के प्रत्याशित मूल्य के बराबर होने पर अभिभावी होता है। तदनुसार, हर AS वक्र किसी ऐसे बिंदु से होकर गुजरता है जहाँ —

$$P = P^e \text{ और } Y = Y_n$$

इसके महत्वपूर्ण निहितार्थ निम्नवत् होते हैं—

- जब $Y = Y_n$ तो $P = P^e$
 - जब $Y > Y_n$ तो $P > P^e$
 - जब $Y < Y_n$ तो $P < P^e$
- ...(2.9)

2.5 वक्र का खिसकाव

चलिए, एक बार फिर समीकरण (2.8) पर नजर डालते हैं। यहाँ समग्र आपूर्ति वक्र अर्थात्

$$P = P^e (1 + \mu) F\left(1 - \frac{Y}{L}, z\right)$$

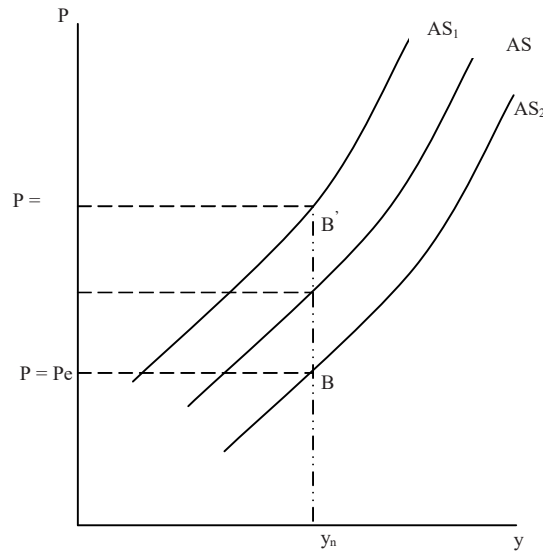
जैसा कि पहले उल्लेख किया गया, P और Y के बीच एक सकारात्मक संबंध होता है। चर P और Y के अलावा, ऐसे तीन कारक और हैं जो AS वक्र को प्रभावित करते हैं, यथा,

- (i) प्रत्याशित मूल्य P^e
- (ii) मूल्यवृद्धि μ , तथा
- (iii) बहुबोधक चर z

इन कारकों में कोई भी परिवर्तन AS वक्र के खिसकाव की ओर अग्रसर करता है। आइए, देखें कि इन कारकों में कोई परिवर्तन AS वक्र को कैसे प्रभावित करता है।

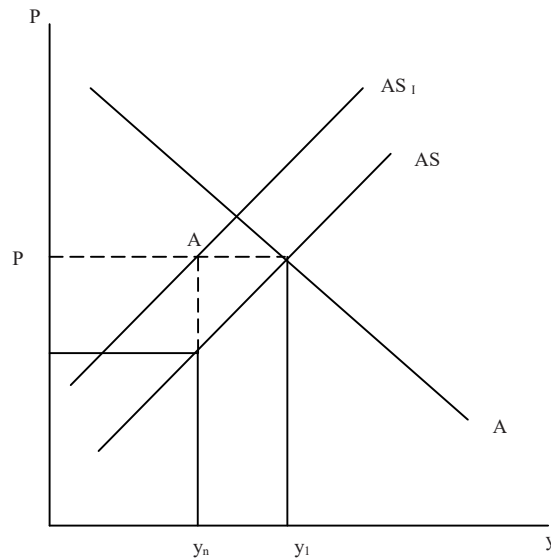
2.5.1 प्रत्याशित मूल्य में परिवर्तन P^e

हम यह पहले ही दर्शा चुके हैं कि AS वक्र प्रत्याशित मूल्य P^e और उत्पादन के स्वाभाविक से होकर गुजरता है। मान लीजिए कि प्रत्याशित मूल्य में P^e तक कोई वृद्धि होती है। इसका अर्थ है कि फर्मों कीमतों में वृद्धि की प्रत्याशा करती हैं और वे वर्तमान मूल्य पर अपेक्षाकृत कम मात्रा में आपूर्ति कर देंगी। इससे AS वक्र बाईं ओर ऊपर खिसकेगा, जैसा कि चित्र 2.5 में दर्शाया गया है। यह नया AS वक्र चित्र में AS' के रूप में दर्शाया गया है। इसी प्रकार, यदि फर्मों कीमत में किसी गिरावट की अपेक्षा करती हों (अर्थात् प्रत्याशित मूल्य में P^e से P^e'' तक की कमी) तो वे भविष्य की अपेक्षा वर्तमान में कहीं अधिक आपूर्ति करना चाहेंगी। तदनुसार, बाईं ओर AS वक्र में एक बहिर्मुखी खिसकाव देखने में आएगा। इस प्रकार AS वक्र AS_2 की ओर खिसकेगा।



चित्र 2.5: AS वक्र में खिसकाव

इससे हम यह भी देख पाते हैं कि यदि समग्र माँग (AD) और समग्र आपूर्ति (AS) वक्र किसी ऐसे उत्पादन स्तर पर प्रतिच्छेद करते हों जो Y_n की अपेक्षा नीचे अथवा ऊपर हो तो इससे AS वक्र तब तक खिसकता रहेगा जब तक कि वह मध्यावधि में Y_n तक न पहुँच जाए। चलिए, एक उदाहरण लेते हैं। ऊपर समीकरण (2.9) में दिए गए परिणामों से हमें ज्ञात है कि यदि $Y > Y_n$ तो $P > P^e$ ।



चित्र 2.6: प्रत्याशित मूल्य AS वक्र

ऐसे किसी भी उदाहरण को हम चित्र 2.6 की सहायता से समझेंगे। यहाँ AS_0 वक्र $P^e = P_0$ के आधार पर खींचा गया था और इस कारण वह P_0 और Y_n से होकर गुजरता है। यह अर्थव्यवस्था एक अल्पावधि संतुलन से शुरू होती है जहाँ AS_0 और AD बिंदुओं Y_1 और P_1 पर प्रतिच्छेद करते हैं। इसका अर्थ है कि वास्तविक मूल्य P प्रत्याशितमूल्य P^e से कहीं अधिक है। कभी न कभी कर्मचारियों को यह एहसास हो ही जाएगा कि वे नुकसान में हैं क्योंकि वेतन तय करते समय उन्होंने P^e के बराबर एक निम्नतर P_0 पर विचार किया था।

यह बोध हो जाने पर अब ये कर्मचारी कीमतों संबंधी अपनी प्रत्याशाओं को संशोधित करेंगे (संशोधन का समय और उसकी विधि वेतन अनुबंध की प्रकृति एवं प्रत्याशा-निर्धारण विधि पर निर्भर करते हैं)। चलिए, मान लेते हैं कि कर्मचारी वर्ग कीमतों संबंधी प्रत्याशाएँ इस प्रकार निर्धारित करता है कि प्रत्याशित मूल्य पूर्वावधि मूल्य के बराबर होता है अर्थात् $P_t = P_{t-1}$ अब चित्र 2.6 पर वापस आएँ। जब कर्मचारियों को यह बोध होता है कि वास्तविक मूल्य P_1 प्रत्याशित मूल्य P_0 से अधिक है तो वे अपनी प्रत्याशाएँ ऊपर बढ़ाते हुए संशोधित करते हैं और नया प्रत्याशित मूल्य P_1 हो जाता है। उच्चतर प्रत्याशित मूल्यों को लेकर वे उच्चतर ही वेतन राशियों की माँग करते हैं और परिणामतः फर्म संशोधित वेतनमान पर मूल्यवृद्धि लागू कर देती हैं। इस प्रकार हमें एक नया AS वक्र प्राप्त होता है जो उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर उच्चतर मूल्य दर्शाता है। यह नया AS वक्र AS_1 नये प्रत्याशित मूल्य P_1 और उत्पादन के स्वाभाविक स्तर Y_n से होकर गुजरता है, जो कि उक्त चित्र में बिंदु A से दर्शाया गया है। यहीं AS_1 वक्र AS_0 वक्र के ऊपर अवस्थित है (ध्यान देने की बात है कि अर्थव्यवस्था अब भी मध्यावधि संतुलन में नहीं आई है। बहरहाल, इस पर विस्तृत चर्चा अगली इकाई में की जाएगी)।

2.5.2 मूल्यवृद्धि μ और बहुबोधक चर z में परिवर्तन

चर z में कोई भी वृद्धि कर्मचारियों को बेरोजगारी/रोजगार के प्रत्येक स्तर पर उच्चतर वेतन की माँग करने के लिए प्रवृत्त करती है और इस प्रकार फर्म उच्चतर वेतन राशियों पर मूल्यवृद्धि लागू कर देती हैं। चर z में यह वृद्धि AS वक्र में ऊर्ध्वमुखी खिसकाव के रूप में दर्शाई जाती है।

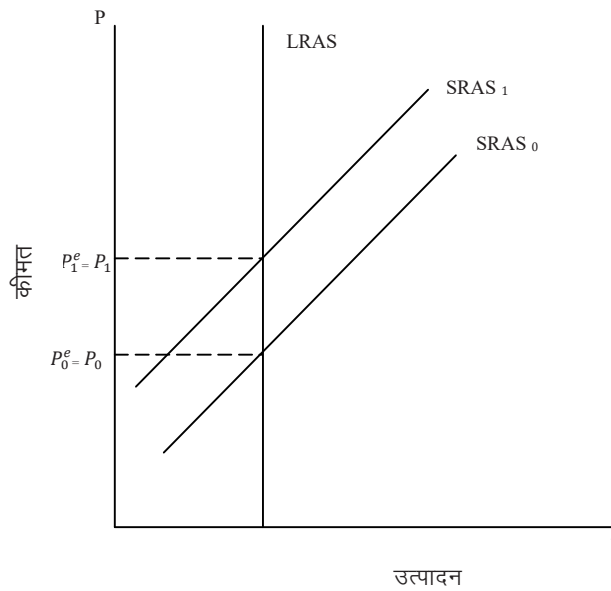
चर μ में किसी भी वृद्धि का अर्थ होता है कि फर्म लागत राशियों से ऊपर कोई उच्चतर मूल्यवृद्धि लागू कर देती हैं और इस प्रकार उत्पादन के प्रत्येक स्तर के अनुरूप कीमतें उच्चतर ही रहती हैं। एक बार फिर AS वक्र मूल्य वृद्धि में भी वृद्धि की वजह से ऊपर की ओर खिसकता है।

2.6 अल्पावधि और दीर्घावधि समग्र आपूर्ति

पिछले पाठांश के अनुसार, अल्पावधि समग्र आपूर्ति वक्र (SRAS) उत्पादन और कीमतों के बीच कोई सीधा संबंध दर्शाता एक ऊर्ध्वमुखी प्रवण वक्र होता है। प्रत्येक SRAS दी गई प्रत्याशित कीमतों के आधार खींचा जाता है। मध्यावधि और दीर्घावधि में, बहरहाल, मूल्य प्रत्याशाएँ बदल सकती हैं, जिसके फलस्वरूप SRAS में खिसकाव देखा जाएगा। प्रत्याशित कीमतों में किसी भी परिवर्तन के साथ हमें एक नया SRAS प्राप्त होता है जो नये प्रत्याशित मूल्य और उत्पादन के स्वाभाविक स्तर से होकर गुजरता है। दीर्घावधि आपूर्ति वक्र (LRAS) अवकलित करने के लिए Y_n से होकर गुजरने वाले विभिन्न SRAS के बिंदुओं को मिलाया जा सकता है। दीर्घावधि में आगत कीमतें ठीक उत्पादन कीमतों की दर पर ही बदलती हैं। अतः समग्र आपूर्ति वक्र अनुलम्ब हो जाता है। दीर्घावधि में वास्तविक उत्पादन स्वाभाविक अथवा संभावित उत्पादन के बराबर ही होता है। इस बात को चित्र 2.7 से जाँचा जा सकता है कि LRAS एक शीर्ष रेखा है, जहाँ विभिन्न कीमतों के लिए उत्पादन Y_n पर तय है जबकि प्रत्येक कीमत प्रत्याशित मूल्य के बराबर है अर्थात्

$$P = P^e$$

संभावित उत्पादन का स्तर कालांतर में बदलता है। आइए, संभावित उत्पादन में ऐसे परिवर्तनों के कारण पता करें। ध्यान दें कि यदि श्रमिक संख्या, पूँजी भंडार, प्राकृतिक संसाधन राशि, अथवा प्रौद्योगिकी की अवस्था में कोई परिवर्तन होता है तो संभावित उत्पादन बदलता है। तदनुसार, संवृद्धि के दो स्रोत होते हैं – (i) निवेश वृद्धि, और (ii) प्रौद्योगिकीय प्रगति।



चित्र 2.7: दीर्घावधि AS वक्र

अर्थव्यवस्था में संसाधन संचय होता है तो कालांतर में संभावित जीडीपी में इजाफा होता है। अब पहले से अधिक मशीनें, अधिक भवन, अधिक कच्चा माल, आदि होते हैं। इस प्रकार के निवेश अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में मददगार सिद्ध होते हैं। दूसरा स्रोत, यथा प्रौद्योगिकीय प्रगति, कालांतर में ही साकार होता है। आपने देखा ही होगा कि विगत वर्षों में अधिकाधिक शक्तिशाली कंप्यूटर और मोबाइल आविष्कृत होकर सामने आए। प्रौद्योगिकी में ऐसी उन्नति अधिकांश क्षेत्रों में दिखाई दे रही है। प्रौद्योगिकीय प्रगति उत्पादकता अथवा दक्षता में वृद्धि की ओर अग्रसर करती है। इसका अर्थ यह है कि अब हम उत्पादन के उसी स्तर पर पहले से अधिक उत्पादन कर सकते हैं।

इस प्रकार, कालांतर में LRAS वक्र दाएँ खिसकता है। ध्यान देने की बात है कि संभावित उत्पादन स्तर में होने वाले परिवर्तन मूल्य स्तर पर निर्भर नहीं करते।

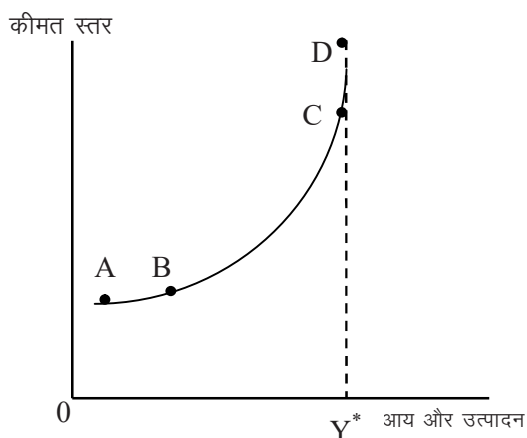
2.7 मध्यावधि में AS वक्र

मध्यावधि एक ऐसी समयावधि होती है जिस दौरान अर्थव्यवस्था अपने स्थाई निवेश (माना, पूँजी) को अपने दीर्घावधि स्तर पर समंजित करती है। समष्टि अर्थशास्त्र में, हम मानकर चल सकते हैं कि लगभग 5 से लेकर 10 वर्ष की अवधि मध्यावधि की श्रेणी में आती है। ऊपर हमने जाना कि AS वक्र दीर्घावधि में ऊर्ध्वस्थ (परंपरागत) होता है और अल्पावधि में क्षैतिज (केन्जियन)। इन दोनों वक्रों के कुछ बीच की-सी स्थिति मध्यावधि में देखी जाती है, जबकि AS वक्र ऊर्ध्वमुखी प्रवण देखा जाता है।

आइए, मध्यावधि गतिविज्ञान को समझें। यदि फर्मों के समक्ष उनके माल व सेवाओं की ऊँची माँग होती है तो वे अल्पावधि में अधिक उत्पादन देकर प्रतिक्रिया देती हैं। चूँकि अब समग्र उत्पादन निरंतर बढ़ने लगता है, फर्मों और अर्थव्यवस्था अपनी पूर्ण क्षमता के निकट आ जाती हैं। ऐसा संभव नहीं है कि समग्र अर्थव्यवस्था यकायक उत्पादन के पूर्ण नियोजन स्तर पर पहुँच जाए। जब समग्र माँग बढ़ती है तो फर्मों प्रतिक्रिया स्वरूप आरंभ में उत्पादन बढ़ा देती हैं। चूँकि समग्र माँग आगे भी बढ़ती ही रहती है, फर्मों कीमतें बढ़ाना शुरू कर देंगी। फर्मों अपने पूर्ण क्षमता निबाधों तक भी पहुँचने लगती हैं, वे अल्पावधि में अपना उत्पादन नहीं बढ़ा पाती हैं।

जैसा कि व्यष्टि अर्थशास्त्र से आपको ज्ञात ही है, पूँजी एवं शीर्ष प्रबंधन जैसे कुछ निवेश अल्पावधि में ही तय किए जाते हैं। कुछ फर्मों एवं उद्योग दूसरों से पहले ही अपनी अधिकतम उत्पादन क्षमता पर पहुँच जाते हैं; इसलिए AS वक्र में कोई व्याकुंचन नहीं दिखाई देगा। साथ ही, बेरोजगारी की दर में भी कोई गिरावट नहीं दर्ज नहीं होगी क्योंकि अर्थव्यवस्था पूर्ण क्षमता स्तर पर जा रही है। उत्पादन के किसी स्तर (Y^*) पर फर्मों के लिए और अधिक विस्तार वस्तुतः असंभव हो जाता है क्योंकि उत्पादन के सभी कारक पूर्णतः उपभुक्त होते हैं। उत्पादन के ऐसे स्तर पर, मूल्य स्तर जो चाहे हो, उत्पादन और अधिक नहीं बढ़ सकता।

चित्र 2.8 में, हमने ऊर्ध्वमुखी प्रवण AS वक्र दर्शाया है। इस वक्र के खंड A से B तक कुछ अधिक समतल भाग नजर आता है (केन्जियन क्षेत्र), जबकि खंड C से D तक कुछ अधिक ढालू भाग दिखाई पड़ता है (परंपरागत क्षेत्र)। आप देखेंगे कि इस चित्र में तीनों समयावधियाँ (अल्पावधि, मध्यावधि और दीर्घावधि) सारबद्ध हैं। इस AS वक्र में वर्णित अभिलक्षण निम्नवत् हैं: बिंदु B के नजदीक तक अल्पावधि है; बिंदु B से लेकर बिंदु C तक मध्यावधि (मध्यवर्ती क्षेत्र) है; और बिंदु C से आगे दीर्घावधि है (उत्पादन Y^*)। व्यापार मंदी के दौरान अर्थव्यवस्था AS वक्र के समतल भाग पर सक्रिय रहती है (केन्जियन दृष्टिकोण)। किसी अर्थव्यवस्था का अधिकतम उत्पादन है Y^* , यथा पूर्ण नियोजन उत्पादन (परंपरागत दृष्टिकोण)।



चित्र 2.8: मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र

कैतिज AS वक्र की केन्जियन अवस्था और ऊर्ध्वस्थ AS वक्र की परंपरागत अवस्था अपवाद हैं। सामान्य परिस्थितियों में AS वक्र ऊर्ध्वमुखी प्रवण होता है। अतएव, अधिक विश्लेषण के लिए हम मध्यावधि AS वक्र पर विचार करते हैं।

2.7.1 मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र की प्रवणता

समस्त मूल्य स्तर में परिवर्तनों पर आगत मूल्यों की प्रतिक्रिया ही परंपरागत और केन्जियन अवधारणाओं के बीच अंतर का आधार होता है। परंपरागत अर्थशास्त्रियों के अनुसार, मूल्य परिवर्तन पूर्णतः प्रत्याशित होता है। इसका अर्थ है कि उत्पादकों और परिवारों की अपेक्षाएँ पूरी होती हैं। उदाहरण के लिए, यदि उत्पादक अपेक्षा करते हैं कि आने वाले साल में कीमतें 10 प्रतिशत तक बढ़ेंगी तो कीमतें वाकई ठीक 10 प्रतिशत तक बढ़ती हैं (न तो 10 प्रतिशत से ऊपर, न ही 10 प्रतिशत से नीचे)।

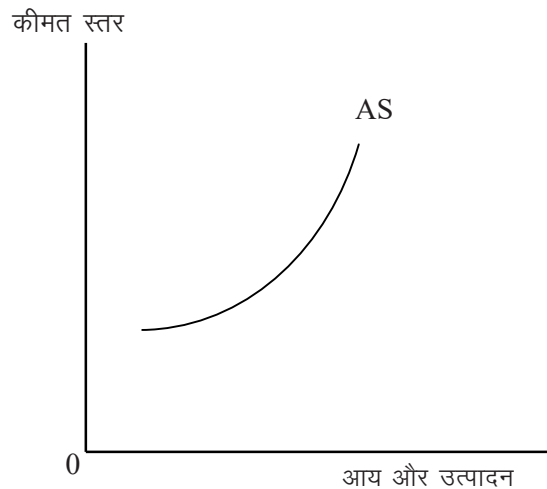
केन्जियन दृष्टिकोण, बहरहाल, यह इंगित करता है कि मूल्य स्तर में कोई भी वृद्धि सदा पूर्ण प्रत्याशित नहीं होती। आगत मूल्यों में परिवर्तनों और उत्पादन मूल्यों में परिवर्तनों के

बीच कुछ समय पतन देखा जाता है। दूसरे शब्दों में, वेतन दर अनुदार होती है। इसके लिए अनेक कारण उत्तरदायी होते हैं,

जैसे—(i) नामिक वेतन परिवर्तनशील आर्थिक दशाओं के प्रति धीमे समंजित होते हैं। इसका कारण श्रमिकों और फर्मों के बीच 'दीर्घावधि संविदाएँ' मानी जा सकती हैं। संविदा के भाग स्वरूप, प्रायः वेतन दर पहले ही तय कर ली जाती है।

(ii) फर्मों को समंजन मूल्यों के लिए सभी लागत राशियाँ उपगत करनी पड़ती हैं। चलिए, एक रेस्तराँ का उदाहरण लेते हैं। बाजार में सब्जियों के दाम आए दिन बढ़ते-घटते रहते हैं; परंतु रेस्तराँ मालिक अपने मैन्यू कार्ड में व्यंजनों के दाम वही दर्शाते हैं। यदि वे व्यंजनों के दाम सब्जियों के दामों के अनुसार बदलना चाहेंगे तो उन्हें अपने मैन्यू कार्ड जल्दी-जल्दी छपवाने पड़ेंगे। इन मैन्यू कार्डों की छपाई और वितरण लागत उनके लाभ का बड़ा हिस्सा हजम कर जाएगी! एक इसी प्रकार की स्थिति अन्य फर्मों के समक्ष आती है और वे अपनी कीमतें तब तक नहीं बदलते जब तक कि अर्थव्यवस्था में भाव संबंधी रुझान स्पष्ट और महत्वपूर्ण न हो। केन्जियन अर्थशास्त्री इस कारण को 'मैन्यू कॉस्ट' की संज्ञा देते हैं।

(iii) ग्राहक जो वस्तुएँ और सेवाएँ क्रय करते हैं वे उनके कुछ दामों के अभ्यस्त होते हैं। वे कीमतों को उसी स्तर पर देखना पसंद करते हैं और मूल्य वृद्धि का विरोध करते हैं। व्यापार में अपना स्थान और ग्राहकों में अपनी साख बनाए रखने के लिए फर्म कीमतें बारंबार नहीं बढ़ातीं। इस प्रकार, कीमतें कालांतर में धीमे-धीमे ही बदलती हैं। अतएव, समग्र आपूर्ति वक्र ऊर्ध्वमुखी प्रवणता दर्शाता है। (देखें चित्र 2.9)।



चित्र 2.9: मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र

2.7.1 मध्यावधि समग्र आपूर्ति में खिसकाव

अब आप जान चुके हैं कि AS वक्र अर्थव्यवस्था में प्रस्तुत उत्पादन और मूल्य स्तर के बीच संबंध की व्याख्या करता है। तदनुसार, कीमतों में कोई भी परिवर्तन AS वक्र के एक छोर से दूसरे छोर तक संचलन में परिणत होगा। कीमतों के अलावा, ऐसे अनेक कारक हैं जो समग्र उत्पादन को प्रभावित करते हैं। जब हम AS वक्र खींचते हैं तो हम यह मानकर चलते हैं कि अन्य कारक स्थिर रहेंगे। इस प्रकार, इन कारकों में कोई भी परिवर्तन AS वक्र को खिसका देता है। आइए, इन कारकों को पहचानें।

वैयक्तिक फर्म के निर्णय को प्रभावित करने वाली कोई भी चीज (वस्तु की कीमत के अलावा) अल्पावधि में समग्र आपूर्ति वक्र को खिसका सकता है।

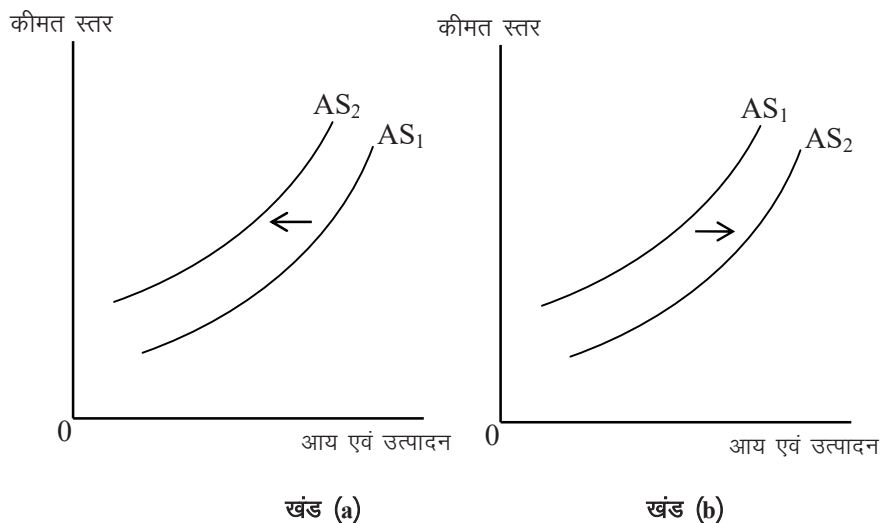
तदनुसार, AS वक्र को खिसकाने वाले अनेक कारक होते हैं, यथा— आपूर्ति प्रघात, आर्थिक संवृद्धि, गतिहीनता, सार्वजनिक नीति, और प्राकृतिक आपदाएँ। आइए, इन कारकों पर कुछ विस्तार से चर्चा करें।

आगत मूल्य: यदि आगत मूल्य गिरते हैं तो उत्पादन लागत भी घट जाती है।

इसका अर्थ है कि फर्मे प्रदत्त बजट में कहीं अधिक उत्पादन दे सकती हैं। तदनुसार, AS वक्र में दाहिने खिसकाव देखा जाता है। इस प्रकार का खिसकाव चित्र 2.10 के खंड (b) में दर्शाया गया है। इसी प्रकार, यदि आगत मूल्यों में कोई वृद्धि होती है तो उत्पादन लागत में भी वृद्धि देखी जाएगी।

यहाँ AS वक्र बाईं ओर खिसकेगा, जैसा कि चित्र 2.10 के खंड (a) में दर्शाया गया है। आगत मूल्यों में उतार-चढ़ाव एक सामान्य दृश्यघटना है। कच्चे तेल की कीमतों में आवधिक वृद्धियाँ आपने देखी ही होंगी, जो भारतीय अर्थव्यवस्था को गहरे प्रभावित करता है। प्रौद्योगिकीय प्रगति: पाठांश 2.6 में हमने AS वक्र पर प्रौद्योगिकीय प्रगति के प्रभाव के विषय में चर्चा की। प्रौद्योगिकी में उन्नति फर्मों की उत्पादकता बढ़ा देती है। प्रौद्योगिकीय प्रगति के फलस्वरूप AS वक्र दाएँ खिसक जाता है (देखें चित्र 2.10 का खंड (b))। सार्वजनिक नीति : सरकार फर्मों को प्रोत्साहन प्रदान करती है ताकि आर्थिक संवृद्धि में गति आ सके।

ये प्रोत्साहन फर्मों के लिए कर कटौतियों अथवा आधारिक संरचना निर्माण (जैसे सड़कें, विद्युत आपूर्ति, संचार, आदि) पर उच्चतर राजकीय व्यय के रूप में हो सकते हैं। ऐसे प्रोत्साहन फर्मों की उत्पादन लागत घटाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप AS वक्र दाएँ खिसक जाता है। इसके विपरीत, यदि सरकारी नीतियाँ उत्पादन लागत बढ़ाने वाली हों (जैसे कठोरतर पर्यावरण संबंधी मानक, कर दर में वृद्धि, आधारिक संरचना पर सार्वजनिक व्यय में कमी) तो AS वक्र में बाईं ओर खिसकाव देखा जाता है। आप देखेंगे कि पारिवारिक आय पर कर दर में परिवर्तन AD वक्र को प्रभावित करते हैं, न कि AS वक्र को। .



चित्र 2.10: मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र में खिसकाव

(iv) व्यापार मंदी: व्यापार चक्र AS वक्र को प्रभावित करते हैं। मंदी छाई होने पर माल-सूचियों का जमावड़ा देखा जाता है और फर्मे भविष्य के प्रति निराश दिखाई देती हैं। माल व सेवाओं की माँग भी अधिक नहीं नजर आती। ऐसी परिस्थितियों में AS वक्र बाएँ खिसक जाता है (जैसा कि चित्र 2.10 के खंड (a) में दर्शाया गया है)। इसके विपरीत, किसी व्यापार चक्र के विस्तार सोपान में, फर्मे अपनी व्यापार संक्रियाओं में आशावादी होती

हैं। इस दौर में AS वक्र दाएँ खिसकता है (जैसा कि चित्र 2.10 के खंड (b) में दर्शाया गया है)।

(v) प्राकृतिक आपदाएँ: अर्थव्यवस्थाओं पर प्रायः बाढ़, सूखा, भूकंप आदि

प्राकृतिक आपदाओं का खतरा मंडराया करता है। ऐसी आपदाएँ उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं और AS वक्र को बाएँ खिसका देती हैं।

बोध प्रश्न 1

1) स्पष्ट करें कि P^e में परिवर्तन के कारण AS वक्र में खिसकाव क्यों होता है।

.....

.....

.....

.....

2) मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र की ऊर्ध्वमुखी प्रवणता हेतु कारण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) ऐसे कारक स्पष्ट करें जो समग्र आपूर्ति वक्र में किसी दाएँ खिसकाव में परिणत होते हों (समुचित आरेख का प्रयोग करें)।

.....

.....

.....

.....

2.8 सार-संक्षेप

इस इकाई में हमने देखा कि वक्र की आकृति किस प्रकार श्रम बाजार की दशाओं पर निर्भर करती है। प्रतिस्पर्धी श्रमिक और जिंस बाजारों से कम वाली परिस्थितियों के अधीन AS वक्र का ऊपर की ओर ढाल उत्पादन और मूल्य स्तर के बीच एक सकारात्मक संबंध दर्शाता है। कीमतों संबंधी प्रत्याशाओं में कोई भी बदलाव AS वक्र को खिसका देता है, जो कि दीर्घावधि में एक लंबवत् AS वक्र देता है। इस AS वक्र पर कुछ चरों के प्रभाव पर भी हमने चर्चा की।

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) (i) इससे z में वृद्धि होती है और WS दाएँ खिसक जाता है। वास्तविक वेतन वही रहता है जबकि बेरोजगारी बढ़ती है। वास्तविक वेतन PS वक्र से इंगित किया जाता है। अब कर्मचारी यह वेतन बेरोजगारी की किसी ऊँची दर पर ही स्वीकार करेंगे।

- (ii) जब z में ह्रास होता है तो WS बाएँ खिसक जाता है।
- (iii) मूल्यवृद्धि घट जाती है जिससे PS वक्र में ऊर्ध्वमुखी खिसकाव आता है।
वास्तविक वेतन बढ़ता है और बेरोजगारी घटती है।

बोध प्रश्न 2

- 1) पाठांश 2.5.1 पढ़ें और उत्तर दें।
- 2) ऊर्ध्वमुखी प्रवण AS वक्र हेतु कारण हैं –
 - (i) मात्रिक वेतन परिवर्तनशील आर्थिक दशाओं के प्रति समंजित होने के प्रति सुस्त हों; (ii) फर्मों को कीमतें समंजित करने के लिए लागत उपगत करनी पड़ती है, जिन्हें मैन्यू कॉस्ट्स कहा जाता है; और (iii) सामाजिक आदर्श और निष्पक्षता के विचार से फर्म कीमतें बार-बार नहीं बदलतीं।
- 3) ऐसे अनेक कारक हैं जो समग्र आपूर्ति को प्रभावित करते हैं और AS वक्र में खिसकाव ले आते हैं। इन्हें आपूर्ति आघात, सार्वजनिक नीति, व्यापार चक्र, प्राकृतिक आपदा, आदि के रूप में गिनाया जा सकता है। ऐसी स्थितियों को पहचानें जो AS वक्र को दाएँ खिसका सकती हैं। विस्तृत विवरण के लिए पाठांश 2.7.2 पढ़ें।

इकाई 3 संतुलन उत्पादन और कीमतें *

इकाई की रूपरेखा

- 3.0 उद्देश्य
- 3.1 विषय प्रवेश
- 3.2 संतुलन उत्पादन और कीमतें : अल्पावधि और मध्यावधि
 - 3.2.1 अल्पावधि में संतुलन
 - 3.2.2 अल्पावधि से मध्यावधि
- 3.3 माँग आघात
 - 3.3.1 विस्तारकारी मौद्रिक नीति
 - 3.3.2 विस्तारकारी मौद्रिक नीति और युक्तियुक्त प्रत्याशाएँ
 - 3.3.3 विस्तारकारी राजकोषीय नीति
- 3.4 आपूर्ति आघात
 - 3.4.1 PS वक्र का खिसकाव
 - 3.4.2 WS वक्र का खिसकाव
- 3.5 सार-संक्षेप
- 3.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

3.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप इस स्थिति में होंगे कि—

- समग्र आपूर्ति व समग्र माँग अर्थात् AS-AD वक्रों का प्रयोग कर सकें;
- देख सकें कि उक्त वक्रों में खिसकाव के कारण उत्पादन व कीमतें कैसे प्रभावित होती हैं; तथा
- समझ सकें कि कोई भी सरकारी नीति मध्यावधि में उत्पादन को प्रभावित नहीं कर सकती है।

3.1 विषय प्रवेश

पिछली कुछ इकाइयों में हमने AD और AS वक्र अवकलित किए थे। इस इकाई में हम उन्हें एक साथ रखेंगे और अल्पावधि के साथ-साथ मध्यावधि में भी साम्य उत्पादन और कीमतों पर माँग एवं आपूर्ति आघातों का प्रभाव देखेंगे।

हम नेपथ्य में होने वाली घटनाओं पर भी नजर डालेंगे और समझेंगे कि ब्याज दर व निवेश व्यय के साथ क्या होता है। साथ ही, श्रम बाजार के माध्यम से हम वास्तविक वेतन पर उनका प्रभाव देखेंगे।

3.2 संतुलन उत्पादन और कीमतें : अल्पावधि और मध्यावधि

आइए, समग्र माँग के समीकरण का स्मरण करें जो कि निम्नवत् था —

$$Y = \gamma A + \beta \frac{M}{P} \text{ अथवा } P = \frac{\beta M}{\gamma A - Y} \quad \dots (3.1)$$

* सुश्री अर्चना अग्रवाल, सहायक प्राध्यापक, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

जहाँ $\gamma = \frac{h\alpha}{h+abk}$ और $\beta = \gamma \frac{b}{h}$

यहाँ A राजकोषीय-नीति प्राचल है; γ राजकोषीय-नीति गुणक है; M/P वास्तविक मुद्रा आपूर्ति है और β मौद्रिक-नीति गुणक है।

अब याद करें कि विस्तारकारी नीतियाँ, राजकोषीय और मौद्रिक दोनों, AD वक्र को दाएँ (अथवा ऊपर की ओर) खिसका देती हैं जबकि संकुचनकारी नीतियाँ AD वक्र को बाएँ (अथवा नीचे की ओर) खिसकाने लगती हैं। इन नीतिगत परिवर्तनों के अलावा, AD वक्र स्वायत्त व्यय A में किसी बदलाव की वजह से भी खिसक सकता है।

समग्र माँग के किसी भी घटक में किसी परिवर्तन के कारण AD वक्र में खिसकाव को *माँग आघात* भी कहा जाता है।

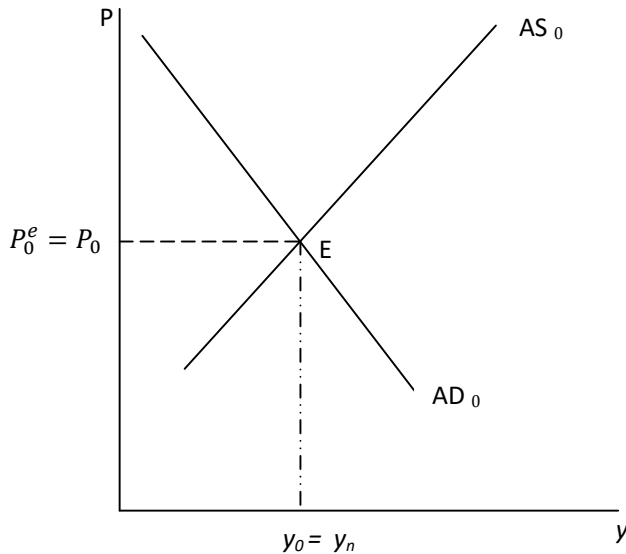
दूसरी ओर, AS वक्र को निम्नवत् अभिव्यक्त किया जा सकता है –

$$P = P^e (1 + \mu) F(1 - \frac{Y}{L}, z) \quad \dots (3.2)$$

हर AS वक्र को प्रत्याशित मूल्य के ज्ञात स्तरों P^e (प्रत्याशाओं पर आगे और चर्चा हम इकाई 4 व 5 में करेंगे), मूल्यवृद्धि μ और बहुअर्थीय चर z के आधार पर खींचा जाता है। इन प्राचलों में से किसी एक में भी परिवर्तन AS वक्र के खिसकाव में परिणत होता है। चर μ अथवा z में किसी परिवर्तन के कारण इस AS वक्र का खिसकाव *आपूर्ति आघात* कहलाता है। हमने यह भी देखा है कि हर AS वक्र एक ऐसे बिंदु से होकर गुजरता है जहाँ $P = P^e$ और $Y = Y_n$ । उपर्युक्त से हम निम्नलिखित निष्कर्ष निकाल सकते हैं –

- जब $Y = Y_n$ तब $P = P^e$
- जब $Y > Y_n$ तब $P > P^e$
- जब $Y < Y_n$ तब $P < P^e$

3.2.1 अल्पावधि में संतुलन



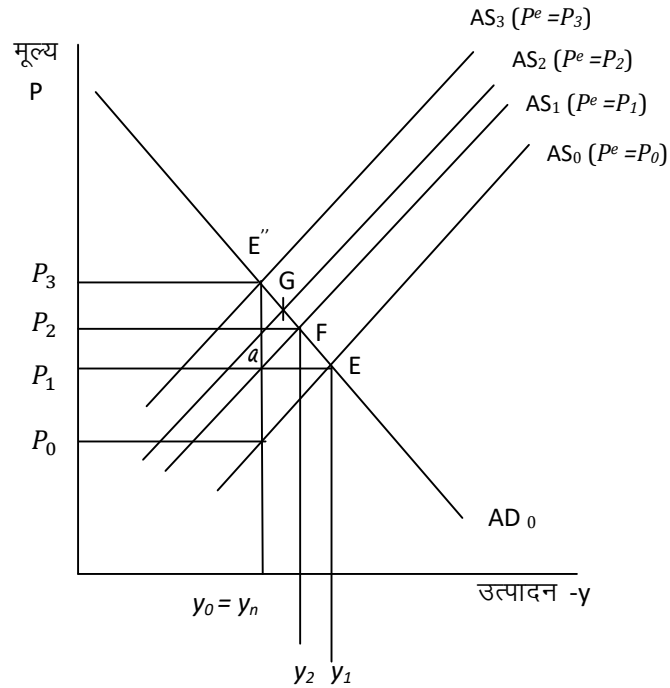
चित्र 3.1: अल्पावधि में संतुलन

यहाँ ऊपर दिए गए चित्र 3.1 में समग्र मांग वक्र AD_0 है और समग्र आपूर्ति वक्र AS_0 है। ये AD और AS वक्र बिंदु E पर प्रतिच्छेदन कर साम्य उत्पादन Y_0 और साम्य मूल्य स्तर P_0 दर्शाते हैं।

माना उत्पादन Y_0 उत्पादन की स्वाभाविक दर Y_n के बराबर ही है। याद करें कि यदि $Y = Y_n$ तो $P = P^e$ । इसका अर्थ है कि P_0 प्रत्याशित मूल्य भी है अर्थात् वह P_0^e के बराबर है। यहाँ यह AD वक्र राजकोषीय-नीति प्राचल A और मौद्रिक नीति M के ज्ञात मानों के अनुसार खींचा गया है। बिंदु E पर माल बाजार, वित्त बाजार और श्रम बाजार तीनों संतुलन में हैं। ऐसा इसलिए है कि बिंदु E दिए गए AD और AS दोनों वक्रों पर अवस्थित है। बहरहाल, अल्पावधि में AD और AS वक्रों के प्रतिच्छेदन की ऐसी कोई वजह नहीं होती जिसके फलस्वरूप ऐसा साम्य उत्पादन सामने आए जो उत्पादन की स्वाभाविक दर के बराबर हो। साम्य उत्पादन, उत्पादन की स्वाभाविक दर से कम अथवा उससे अधिक हो सकता है। साम्य उत्पादन AD और AS वक्रों की स्थिति पर आश्रित होता है, जो कि फिर मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों के साथ-साथ मूल्यवृद्धि μ और बहुअर्थीय चर z पर भी निर्भर हो जाता है।

3.2.2 अल्पावधि से मध्यावधि

आइए, अब हम अल्पावधि से मध्यावधि की ओर खिसकने की परिवर्तनशीलता को समझते हैं (देखें चित्र 3.2)। सर्वप्रथम समग्र आपूर्ति वक्र AS_0 और समग्र मांग वक्र AD_0 को लेते हैं। यहाँ मूल्य स्तर P_0 पर है जो कि प्रत्याशित मूल्य (P^e) भी है, और साम्य उत्पादन Y_1 है जो कि उत्पादन की स्वाभाविक दर से ऊपर है।



चित्र 3.2: मध्यावधि में संतुलन

यही वह अल्पावधि संतुलन है जिस पर हमने पिछले पाठांश में चर्चा की। बहरहाल, हमें ज्ञात है कि जब $Y > Y_n$ तो $P > P^e$ होगा। चित्र 3.2 में AS_0 वक्र $P^e = P_0$ के आधार पर खींचा गया था, जिसके कारण वह P_0 और Y_n से होकर गुजरता है (ध्यान दें कि यह साम्य कीमत नहीं है)।

यह अर्थव्यवस्था अपनी शुरुआत एक अल्पावधि संतुलन से करती है, जहाँ AS_0 और AD बिंदु Y_1 और P_1 प्रतिच्छेदन दर्शाते हैं। इसका अर्थ है कि वास्तविक मूल्य P_1 प्रत्याशित मूल्य $P^e = P_0$ से अधिक है।

कभी न कभी श्रमिकों यह बोध अवश्य होगा कि उनका यथार्थ वास्तविक वेतन प्रत्याशित वास्तविक वेतन से कम है क्योंकि वे मजदूरी तय करते समय एक निम्नतर P^e को P_0 के बराबर मानकर चले थे। इस बोध के साथ अब वे कीमतों के विषय में अपनी प्रत्याशाओं को संशोधित करेंगे (संशोधन का समय और विधि वेतन संविदा की प्रकृति और प्रत्याशा करने की विधि पर निर्भर करेंगे)।

चलिए, मान लेते हैं कि श्रमिक कीमतों के विषय में अपनी प्रत्याशाएँ इस प्रकार करते हैं कि प्रत्याशित मूल्य पिछली अवधि की कीमत अर्थात् $P_t = P_{t-1}$ के बराबर बैठता है। अब चित्र 3.2 पर वापस आने पर ज्ञात होता है कि जब श्रमिकों को यह बोध हुआ कि वास्तविक मूल्य P_1 प्रत्याशित मूल्य P_0 से अधिक है तो उन्होंने अपनी प्रत्याशा में ऊर्ध्वमुखी वृद्धि की और नया प्रत्याशित मूल्य P_1 हो गया।

अब श्रमिक उच्चतर प्रत्याशित मूल्यों को लेकर उच्चतर वेतन के लिए मोलभाव करते हैं। उच्चतर वेतन दर उत्पादन लागत में वृद्धि की ओर अग्रसर करती है और फर्म कीमतें तय करते समय संशोधित वेतन पर कोई मूल्यवृद्धि वसूलती हैं। तदनुसार हमें एक नया AS वक्र प्राप्त होता है जो प्रत्येक उत्पादन स्तर पर उच्चतर मूल्य दर्शाता है। इस प्रकार AS_0 से लेकर AS_1 तक AS वक्र में एक खिसकाव दिखाई पड़ता है। यह नया AS वक्र AS_1 नये प्रत्याशित मूल्य P_1 और उत्पादन के स्वाभाविक स्तर Y_n , (बिंदु a) से होकर गुजरता है तथा AS_0 वक्र के ऊपर अवस्थित होता है। नयी संतुलन बिंदु F से दर्शाई जाती है, जहाँ AD वक्र P_2 के बराबर कीमतों और Y_2 के बराबर उत्पादन के साथ नये AS वक्र का प्रतिच्छेदन दर्शाता है। (आप देखेंगे कि बिंदु F बिंदु a से भिन्न है, जो कि AS_1 वक्र की स्थिति दर्शाता है)।

उक्त अर्थव्यवस्था बिंदु F पर अब भी मध्यावधि संतुलन में नहीं है क्योंकि साम्य उत्पादन Y_2 उत्पादन की स्वाभाविक दर Y_n से अधिक है। पुनः हमें ज्ञात है कि जब $Y > Y_n$ तो $P > P^e$ होता है। देर-सवेर श्रमिकों को फिर बोध होगा कि उन्हें दिया जाने वाला वास्तविक वेतन प्रत्याशित वास्तविक वेतन से कम है क्योंकि उन्होंने मजदूरी तय किए जाते समय P^e के बराबर एक निम्नतर P_1 पर विचार किया था। इस बोध के साथ वे एक बार फिर कीमतों के विषय में अपनी प्रत्याशाएँ संशोधित करेंगे और उनकी नयी प्रत्याशित कीमत P_2 के बराबर होगी। अब AS वक्र ऊपर AS_2 की ओर खिसक जाएगा, जो कि बिंदु b पर प्रत्याशित मूल्य (P_2) और उत्पादन की स्वाभाविक दर (Y_n) से होकर गुजरता है। नयी संतुलन बिंदु G पर AD और AS_2 के प्रतिच्छेदन से दर्शाई जाती है। एक बार फिर हम स्वाभाविक उत्पादन स्तर (Y_n) पर पहुँचने में विफल रहे हैं।

उपर्युक्त प्रक्रिया एक बार शुरू होने के बाद तभी समाप्त होती है जब AS वक्र बिंदु E'' पर AD वक्र का प्रतिच्छेदन दर्शाने के लिए यथेष्ट रूप से वहाँ खिसक चुका होता है जहाँ साम्य उत्पादन अब उत्पादन की स्वाभाविक दर Y_n के बराबर हो जाता है और प्रत्याशित मूल्य अब प्रत्याशित मूल्य स्तर कहलाता है। बिंदु E'' मध्यावधि संतुलन दर्शाता है।

इस बिंदु पर वेतन निर्धारकों के पास कीमतों के विषय में अपनी प्रत्याशाएँ बदलने की कोई वजह नहीं बचती और इसीलिए अब AS वक्र में भी कोई खिसकाव नजर नहीं आता।

संक्षेप में,

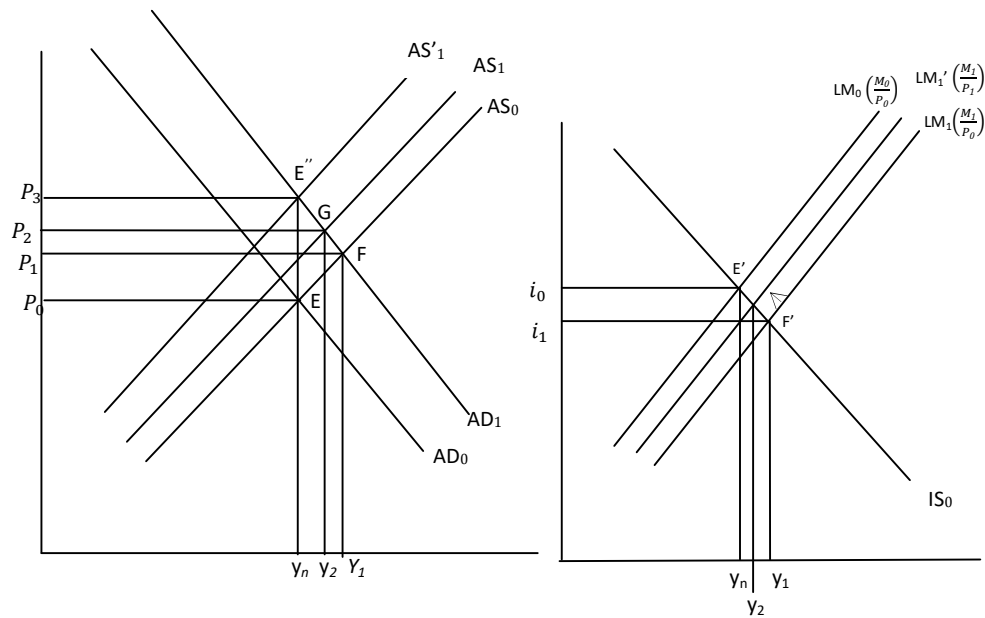
- अल्पावधि (SR) में उत्पादन अपनी स्वाभाविक दर के बराबर, उससे कम अथवा उससे अधिक हो सकता है।
- मध्यावधि (MR) में उत्पादन अपनी स्वाभाविक दर पर वापस आ जाता है। यदि अर्थव्यवस्था की शुरुआत $Y > Y_n$ वाली किसी अल्पावधि संतुलन में हुई हो तो मूल्य स्तर में संभावित वृद्धि माँग और उत्पादन स्तर घटा देती है। उक्त SR से लेकर MR तक समंजन मूल्य स्तर में परिवर्तनों के माध्यम से होता है।

आगामी पाठांश में हम माँग आघातों और आपूर्ति आघातों की वजह से उत्पन्न गड़बड़ी के कारण समंजन की परिवर्तनशीलता पर दृष्टि डालेंगे।

3.3 माँग आघात

आपको याद ही होगा कि समग्र माँग के किसी भी घटक में किसी भी परिवर्तन के कारण AD वक्र में आए खिसकाव *माँग आघात* (demand shock) भी कहलाते हैं।

3.3.1 विस्तारकारी मौद्रिक नीति



खंड (a)

खंड (b)

चित्र 3.3: मौद्रिक विस्तार का प्रभाव

आइए, यहाँ दिए गए चित्र 3.3 पर विचार करें। इस चित्र का खंड (a) AD और AS वक्रों की सहायता से अर्थव्यवस्था में संतुलन प्रस्तुत करता है जबकि खंड (b) इसी संतुलन को IS और LM वक्रों की मदद से प्रस्तुत करता है। खंड (a) दर्शाता है कि यह अर्थव्यवस्था AD_0 और AS_0 के साथ चलती है और यहाँ मध्यावधि संतुलन कायम है। यह संतुलन Y_n के बराबर उत्पादन और P_0 के बराबर मूल्य स्तर के साथ बिंदु E पर नजर आती है। यहाँ P_0 प्रत्याशित मूल्य स्तर भी है। दूसरी ओर, खंड (b) दर्शाता है कि उत्पादन स्तर

Y_n किसी ब्याज दर i_0 से मेल खाता है क्योंकि IS और LM वक्र i_0 और Y_n पर प्रतिच्छेदन दर्शाते हैं।

चलिए, मान लेते हैं कि मौद्रिक विस्तार होता है (यथा, मुद्रा आपूर्ति M_0 से बढ़कर M_1 पर आ जाती है)। यह ब्याज दर में गिरावट की ओर ले जाएगा, जिससे निवेश व्यय बढ़ेगा। तदनुसार, AD वक्र AD_0 से आनुपातिक रूप से खिसककर AD_1 पर आ जाएगा (देखें खंड (a))। उक्त चित्र में खंड (b) में बिंदु E' खंड (a) में बिंदु E से मेल खाता है। अल्पावधि में संतुलन बिंदु E से खिसककर बिंदु F पर आ जाती है, जहाँ उत्पादन Y_1 के बराबर होता है और कीमतें P_1 तक बढ़ती हैं। यह खिसकाव चित्र के खंड (b) में बिंदु F' से मेल खाता है। ध्यान देने की बात है कि कोई भी मौद्रिक नीति आरंभतः LM वक्र को खिसकाकर LM_1 पर ले जाती है जो कि उच्चतर शेर मुद्रा M_1 और पुराने मूल्य स्तर P_0 के आधार पर खींचा जाता है। बहरहाल, चूँकि अल्पावधि में मूल्य स्तर बढ़कर P_1 पर चला जाता है (देखें खंड (a)), वास्तविक मुद्रा शेष कुछ हद तक कम हो जाता है और संगत LM वक्र अब LM'_1 हो जाता है, जो कि मुद्रा आपूर्ति M_1 और उच्चतर मूल्य स्तर P_1 पर आधारित होता है।

जैसा कि हमने ऊपर देखा, बिंदु F केवल अल्पावधि संतुलन हो सकता है क्योंकि बिंदु F पर उत्पादन अपनी स्वाभाविक दर से अधिक और वास्तविक मूल्य P_1 प्रत्याशित मूल्य P_0 से ऊपर होता है। देर-सवेर श्रमिक कीमतों के विषय में अपनी प्रत्याशाएँ संशोधित करते हैं और नया प्रत्याशित मूल्य P_1 हो जाता है। उच्चतर प्रत्याशित मूल्यों के साथ ही एक नया AS वक्र AS_1 सामने आता है, जो कि नये प्रत्याशित मूल्य P_1 और उत्पादन की स्वाभाविक दर Y_n से होकर गुजरता है। उक्त चित्र के खंड (b) में नयी संतुलन बिंदु G पर नजर आती है, जहाँ कीमत P_2 तक बढ़ती है और उत्पादन Y_2 हो जाता है। यह मूल्यवृद्धि मुद्रा शेष और घटा देती है तथा LM वक्र को और ऊपर खिसका देती है।

अर्थव्यवस्था के बिंदु E'' पर एक नयी संतुलन में पहुँचने तक AS वक्र के साथ-साथ LM वक्र के ऊर्ध्वमुखी खिसकाव की उक्त प्रक्रिया चलती ही रहती है। यहाँ पहुँच कर उत्पादन वापस Y_n पर आ जाता है और कीमत P_3 हो जाती है। इस बिंदु पर वेतन निर्धारकों के पास कीमतों के विषय में अपनी प्रत्याशाएँ और अधिक बदलने की कोई वजह नहीं होती और इस कारण AS वक्र में आगे कोई खिसकाव नहीं होता।

चित्र के खंड (b) में हम देखते हैं कि मूल LM वक्र LM_0 के संपाती होने तक LM वक्र पूरी तरह पीछे खिसक जाता है, परंतु अंतिम LM वक्र उच्चतर शेर मुद्रा M_1 और उच्चतर मूल्यों P_3 पर आधारित होता है। वास्तविक मुद्रा शेष M_1/P_3 मूल वास्तविक शेष

M_0/P_0 के बराबर होता है। ब्याज दर वापस मूल ब्याज दर i_0 पर आ जाती है। इस

प्रकार, मध्यावधि में किसी मौद्रिक विस्तार का किसी भी वास्तविक चर पर कोई प्रभाव नहीं होता। तदनुसार, हम कह सकते हैं कि मध्यावधि में मुद्रा तटस्थ होती है।

किसी मौद्रिक विस्तार के परिणाम तालिका 3.1. में संक्षेपित हैं —

तालिका 3.1: मौद्रिक विस्तार के प्रभाव

	उत्पादन	कीमतें	ब्याज दर
अल्पावधि	उछाल	उछाल	गिरावट
मध्यावधि	Y_n पर वापस	उछाल	मूल अवस्था में वापस

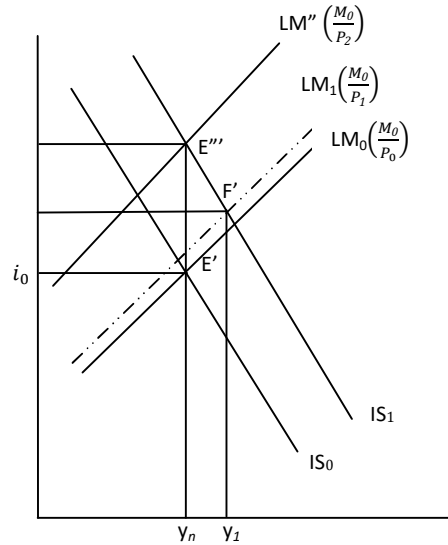
3.3.2 विस्तारकारी मौद्रिक नीति और युक्तियुक्त प्रत्याशाएँ

यदि कीमतों के विषय में प्रत्याशाएँ युक्तियुक्त होंगी (देखें इकाई 5) तो किसी विस्तारकारी नीति का अल्पावधि तक में उत्पादन और वास्तविक शेष राशि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। ऐसा इसलिए है कि पूर्ण दूरदर्शिता और एक पूर्णतः विश्वसनीय मौद्रिक नीति को लेकर श्रमिक कीमतों के विषय में अपनी प्रत्याशाएँ इस प्रकार संशोधित करते हैं कि अल्पावधि में ही प्रत्याशित मूल्य समापक मूल्यों के बराबर हो जाते हैं। इसके अलावा, अल्पावधि में ही AS वक्र ऊपर की ओर खिसक जाता है ताकि वह नये AD वक्र का उत्पादन की स्वाभाविक दर Y_n और उच्चतर मूल्यों (चित्र 3.3 (a) में P_3) पर प्रतिच्छेदन कर सके। मौद्रिक नीति अल्पावधि में उत्पादन पर भी कोई प्रभाव नहीं डालती।

3.3.3 विस्तारकारी राजकोषीय नीति

आइए, अब उत्पादन और कीमतों पर राजकोषीय नीति का प्रभाव देखते हैं। इस प्रभाव को अल्पावधि और मध्यावधि में हम चित्र 3.4 की मदद से स्पष्ट करेंगे। चित्र का खंड (a) राजकीय व्यय में किसी वृद्धि के प्रभाव को AD और AS वक्रों के माध्यम से प्रस्तुत करता है जबकि खंड (b) यही काम IS और LM वक्रों के माध्यम से करता है।

एक बार फिर हम शुरुआत AD_0 और AS_0 से करेंगे। चित्र का खंड (a) दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था Y_n के बराबर उत्पादन और P_0 के बराबर मूल्य स्तर के साथ बिंदु E पर मध्यावधि संतुलन में है। हम यह भी पाते हैं कि P_0 ही प्रत्याशित मूल्य स्तर है। दूसरी ओर, खंड (b) दर्शाता है कि संतुलन बिंदु E' पर है। साम्य उत्पादन स्तर Y_n किसी ब्याज दर i_0 से मेल खाता है क्योंकि IS और LM वक्र i_0 और Y_n पर प्रतिच्छेदन दर्शाते हैं।



चित्र 3.4: राजकोषीय विस्तार का प्रभाव

चलिए, मान लेते हैं कि राजकीय व्यय (G) में कुछ वृद्धि हुई है, जिससे AD वक्र AD_0 से दाएँ खिसककर AD_1 पर आ गया है। परिणामतः Y_1 के बराबर उत्पादन और P_1 के बराबर कीमतों के साथ अल्पावधि संतुलन बिंदु F पर नजर आती है। चित्र का खंड (b) IS_0 से लेकर IS_1 तक IS वक्र में दाईं ओर खिसकाव के माध्यम से G में किसी वृद्धि का प्रभाव दर्शाता है। कीमतों में वृद्धि के कारण LM वक्र कुछ हद तक ऊपर की ओर (देखें बिंदुयुक्त रेखा) खिसकता है। यहाँ Y_1 के बराबर उत्पादन और i_1 के बराबर ब्याज दर के साथ अल्पावधि संतुलन बिंदु F' पर दिखाई पड़ती है। अल्पावधि में निवेश पर प्रभाव अस्पष्ट होता है क्योंकि यहाँ आय स्तर और ब्याज दर दोनों में बढ़ोतरी हुई है।

उक्त चित्र के खंड (a) में बिंदु F ही अल्पावधि संतुलन है क्योंकि उत्पादन अपनी स्वाभाविक दर से अधिक है। इसी प्रकार, वास्तविक मूल्य P_1 प्रत्याशित मूल्य P_0 से अधिक है। देर-सवेर श्रमिकों को यह बोध होगा कि उनका वास्तविक वेतन घट चुका है, और वे कीमतों के बारे में अपनी प्रत्याशाएँ संशोधित करेंगे। इससे AS वक्र में ऊर्ध्वमुखी खिसकाव आएगा। तदनुसार, LM वक्र भी ऊपर की ओर खिसकेगा। यह प्रक्रिया संतुलन बिंदु E'' पर पहुँचने तक जारी रहेगी, जहाँ उत्पादन वापस अपनी स्वाभाविक दर पर आ चुका है। आप देखेंगे कि उत्पादन स्तर अल्पावधि में बढ़ा परंतु मध्यावधि में वह अपने स्वाभाविक स्तर पर वापस आ गया। कीमतें, बहरहाल, एक उच्चतर स्तर पर ही टिकी हैं। चित्र के खंड (b) में संतुलन का संवादी बिंदु E''' है। साथ ही, उत्पादन वाली संतुलन उच्चतर ब्याज दर i_2 वाले Y_n के बराबर है।

जैसा कि विस्तारकारी मौद्रिक नीति की स्थिति में होता है, उत्पादन अपनी स्वाभाविक दर पर वापस आ जाता है और कीमतें ऊपर ही टिकी रहती हैं।

बहरहाल, विस्तारकारी मौद्रिक नीति के प्रभाव की तुलना में एक महत्वपूर्ण अंतर देखने में आता है। विस्तारकारी राजकोषीय नीति की स्थिति में उत्पादन की संरचना भी बदलती है। यद्यपि यहाँ उत्पादन स्तर अपनी स्वाभाविक दर पर ही रहता है, सरकारी खर्च में वृद्धि के कारण निजी निवेश व्यय कम हो जाता है। निजी निवेश में गिरावट ब्याज दर में किसी वृद्धि की वजह से ही आती है। दूसरे शब्दों में, यहाँ गिच-पिच दूर करने की प्रक्रिया 'क्राउडिंग आउट' देखी जाती है।

तालिका 3.2: राजकोषीय विस्तार का प्रभाव

	उत्पादन	कीमतें	ब्याज दर
अल्पावधि	उछाल	उछाल	उछाल
मध्यावधि	Y_n पर वापस उत्पादन संघटन में परिवर्तन : $\uparrow G = \downarrow I$	उछाल	उछाल

बोध प्रश्न 1

- विस्तारकारी मौद्रिक नीति और विस्तारकारी राजकोषीय नीति दोनों ही मध्यावधि में उत्पादन वापस अपने स्वाभाविक स्तर पर लाने में परिणत होती हैं। कहा जाता है कि मौद्रिक नीति तटस्थ होती है, परंतु यह शब्द राजकोषीय नीति के लिए प्रयोग नहीं किया जाता। कारण स्पष्ट करें।

.....

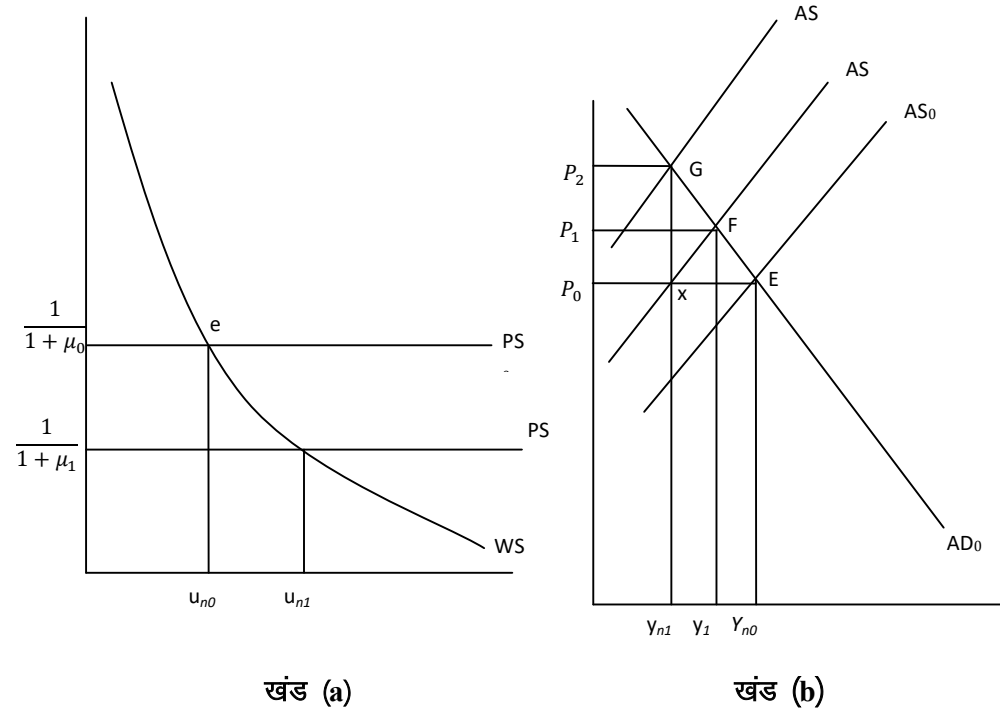
- मान लीजिए कि कोई अर्थव्यवस्था अपनी शुरुआत मध्यावधि संतुलन से करती है। फिर माना कि सरकार करवृद्धि कर देती है। अब AS और AD वक्रों का प्रयोग कर अल्पावधि और मध्यावधि में उत्पादन व कीमतों पर इसका असर दर्शाएँ।

.....

3.4 आपूर्ति आघात

अब हम AS वक्र में खिसकाव के फलस्वरूप उत्पादन और कीमतों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करेंगे। जैसा कि हमें इकाई 2 से ज्ञात है, AS वक्र या तो वेतन-निर्धारण (WS) वक्र में किसी बदलाव के कारण या फिर मूल्य-निर्धारण (PS) वक्र में किसी बदलाव के कारण खिसक सकता है [AS वक्र कीमत विषयक प्रत्याशाओं में परिवर्तन के कारण भी खिसक सकता है परंतु ऐसा अल्पावधि से मध्यावधि में अवस्थांतर के रूप में ही होता है]। यहाँ हमारा वास्ता अल्पावधि में ही AS वक्र के खिसकाव अथवा किसी आपूर्ति आघात से ही है। याद करें कि बहुअर्थीय प्राचल z में कोई भी परिवर्तन, जैसे z में गिरावट, WS वक्र को नीचे खिसका देगा और मूल्यवृद्धि μ में कोई भी बढ़ोतरी PS वक्र को नीचे की ओर खिसका देगी।

3.4.1 PS वक्र में खिसकाव



चित्र 3.5: WS वक्र में खिसकाव का प्रभाव

ऊपर दिए गए चित्र 3.5 पर दृष्टि डालें। चित्र का खंड (a) बिंदु e पर WS और PS_0 वक्रों का प्रतिच्छेदन दर्शाता है, जो कि u_{n0} के रूप में बेकारी की स्वाभाविक दर इंगित करता है।

यह AD_0 वक्र और AS_0 वक्रों के प्रतिच्छेदन से प्रदर्शित Y_{n0} के बराबर उत्पादन की स्वाभाविक दर से मेल खाता है (देखें खंड (b))। आरंभिक मूल्य जो कि प्रत्याशित मूल्य भी है, P_0 के बराबर है। अब मान लीजिए कि विश्व स्तर पर तेल की कीमतों में उछाल आता है। इससे कच्चे माल की लागत और फर्मों के लिए मूल्यवृद्धि μ_0 से बढ़कर μ_1 पर आ जाती है। यह PS वक्र के PS_0 से लेकर PS_1 तक अधोमुखी खिसकाव की ओर अग्रसर करता है। अब श्रम बाजार (देखें खंड (a)) बेकारी की उच्चतर दर u_{n1} और निम्नतर वास्तविक वेतन दर $\frac{1}{1+\mu_1}$ पर संतुलन दर्शाता है।

बेरोजगारी या बेकारी की कोई भी उच्चतर दर उत्पादन की किसी निम्नतर स्वाभाविक दर Y_{n1} से मेल खाती है। अल्पावधि में ही AS वक्र वापस एक नये AS वक्र AS_1 की ओर खिसक जाता है जो कि प्रत्याशित मूल्य P_0 और उत्पादन की नयी स्वाभाविक दर Y_{n1} के माध्यम से गुजरता है (AS_1 चित्र 3.5 के निचले हिस्से में बिंदु x से होकर गुजरता है)। अल्पावधि संतुलन अब बिंदु F पर नजर आती है, जहाँ AD वक्र नये AS वक्र का प्रतिच्छेदन करता है। बिंदु E से दर्शाए गए मूल मूल्यों एवं उत्पादन की अपेक्षा बिंदु F पर मूल्य स्तर (P_1) ऊँचा है और उत्पादन स्तर (Y_1) नीचा।

अब मध्यावधि में हमें अल्पावधि उत्पादन Y_1 की तुलना उत्पादन की नई स्वाभाविक दर Y_{n1} से करनी होगी। यहाँ $Y_1 > Y_{n1}$ और $P_1 > P_0$ होगा। चूँकि उत्पादन Y_1 उत्पादन की स्वाभाविक दर Y_{n1} से अधिक है और मूल्य स्तर P_1 प्रत्याशित मूल्य P_0 से ऊँचा, श्रमिक वर्ग अपनी मूल्य प्रत्याशाएँ बढ़ाकर संशोधित करेगा और AS वक्र ऊपर खिसक जाएगा (Y_{n1} और नये प्रत्याशित मूल्य P_1 से होकर गुजरता हुआ)। यह प्रक्रिया AS और AD वक्रों के Y_{n1} और P_2 पर प्रतिच्छेदन दर्शाने तक जारी रहेगी, जो कि अब प्रत्याशित मूल्य भी दर्शाता है। मध्यावधि संतुलन AD_0 वक्र और AS_2 वक्र के बिंदु G पर प्रतिच्छेदन से दर्शाई जाती है (देखें चित्र 3.5 का खंड (b))। आगे कोई और परिवर्तन नहीं होगा।

किसी प्रतिकूल आपूर्ति आघात का प्रभाव तालिका 3.3 में संक्षेपित है।

तालिका 3.3: WS वक्र में खिसकाव का प्रभाव

	उत्पादन	कीमतें
अल्पावधि	गिरावट	उछाल
मध्यावधि	नयी स्वाभाविक दर तक गिरावट	उछाल

3.4.2 WS वक्र का खिसकाव

यहाँ भी परिणाम ऊपर वर्णित परिणामों की भाँति ही होते हैं। मान लीजिए कि श्रम के संविदाकरण में वृद्धि होती है, जिसके परिणामस्वरूप श्रमिकों की मोलभाव शक्ति क्षीण पड़ जाती है। यह बहुअर्थीय प्राचल z में गिरावट के रूप में सामने आता है और श्रम बाजार में WS वक्र के बाईं ओर खिसकाव में परिणत होता है। श्रम बाजार में बेकारी की स्वाभाविक दर गिर जाती है और इस कारण उत्पादन की उच्चतर स्वाभाविक दर और उन्हीं प्रत्याशित मूल्यों से होकर गुजरते हुए AS वक्र दाँएँ खिसक जाता है।

अल्पावधि में उत्पादन बढ़ेगा और कीमतें कम होंगी। परंतु चूँकि वास्तविक मूल्य प्रत्याशित मूल्यों से कम हैं, मूल्य प्रत्याशाओं का संशोधन अधोमुखी होगा और नयी मध्यावधि संतुलन उत्पादन की उच्चतर (स्वाभाविक) दर और निम्नतर मूल्यों, जो कि प्रत्याशित मूल्य भी हैं, पर दिखाई देगी।

बोध प्रश्न 2

1. अल्पावधि और मध्यावधि में उत्पादन और कीमतों पर बेरोजगारी लाभों में किसी वृद्धि के प्रभाव को WS-PS वक्रों और AS-AD वक्रों का प्रयोग कर दर्शाएँ।

.....
.....
.....
.....
.....

2. मान लीजिए कि कोई अर्थव्यवस्था अपनी शुरुआत मध्यावधि संतुलन से करती है। इसी बीच विश्व स्तर पर तेल की कीमतों में वृद्धि हो जाती है। बहरहाल, सरकार अल्पावधि में व्यापार मंदी से बचने के लिए मुद्रा आपूर्ति बढ़ा देती है। अल्पावधि और मध्यावधि में उत्पादन और कीमतों पर पड़ने वाला प्रभाव दर्शाएँ।

.....
.....
.....
.....
.....

3.5 सार—संक्षेप

अर्थव्यवस्थाएँ समग्र माँग अथवा समग्र आपूर्ति अथवा दोनों पर आघात निरंतर झेलती रहती हैं। हमने देखा कि मध्यावधि में अर्थव्यवस्था सदैव उत्पादन की स्वाभाविक दर पर वापस आती है। बहरहाल, आपूर्ति आघात की स्थिति में उत्पादन की स्वाभाविक दर स्वयं बदल जाती है। दूसरी ओर, अल्पावधि में उत्पादन अपनी स्वाभाविक दर से और कीमतें प्रत्याशित मूल्यों से भिन्न होती हैं।

3.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1. उत्पादन संरचना राजकोषीय नीति के साथ बदलती है और इस कारण एक वास्तविक प्रभाव देखा जाता है।
2. यह संकुचनकारी राजकोषीय नीति की स्थिति है। अल्पावधि में उत्पादन गिरता है और कीमतें बढ़ती हैं। अल्पावधि में ब्याज दर भी गिरती है।

मध्यावधि में ब्याज दर और घटती है, उत्पादन अपनी स्वाभाविक दर की ओर लौट जाता है। कीमतें घटकर प्रत्याशित मूल्यों के बराबर हो जाती हैं।

बोध प्रश्न 2

1. WS वक्र दाएँ खिसकता है और उत्पादन की स्वाभाविक दर में गिरावट आती है (बेरोजगारी की स्वाभाविक दर में वृद्धि)। यह प्रतिकूल आपूर्ति आघात की स्थिति है। अल्पावधि में कीमतें बढ़ती हैं और उत्पादन गिरता है।

मध्यावधि में उत्पादन और गिरता है तथा अपनी नयी स्वाभाविक दर के बराबर हो जाता है। कीमतें बढ़ती हैं और प्रत्याशित मूल्यों के बराबर हो जाती हैं।

2. किसी भी प्रतिकूल आपूर्ति आघात के दौरान सरकारी नीति के जरिए AD वक्र को दाएँ खिसका दिया जाता है। अल्पावधि में उत्पादन वही रहता है और कीमतें बढ़ती हैं। मध्यावधि में उत्पादन गिरकर अपनी नयी स्वाभाविक दर पर आ जाता है और कीमतें कुछ और बढ़कर प्रत्याशित मूल्यों के बराबर हो जाती हैं।